

अपनी बात संपादकीय

मोर्गेबो क्या करेगा ?

ज्ञानेश कुमार जैसे मगरूर चीफ इलेक्शन कमिश्नर के खिलाफ हुआ आंदोलन नाकाम हो गया और कॉंकरोच पार्टी के आंदोलन का झम्लो'प शो' साबित हुआ, ऐसा भारतीय जनता पार्टी ने एलान किया है। भाजपा से ताल्लुक रखने वाले क्त्राटुकार' अखबारों ने जन आंदोलन की तौहीन करने वाली सुखियां देकर अपनी बेवकूफी और बुजदिली साबित की है। हकीकत में दिल्ली में बिल्कुल उलट हुआ है। दिल्ली में आंदोलन को दमनकारी मार्ग से नष्ट करने का जो प्रयास हुआ, उसे संयुक्त राष्ट्र ने घिनीना बताया है। रविवार को दिल्ली में बड़े पैमाने पर आंदोलन होते समय हजारों लोगों को गिरफ्तार किया गया। महिलाओं को घसीटकर प्रिजन वैन में ठूस दिया। अज्ञात स्थान पर ले जाकर बंदी बनाया, इस बारे में संयुक्त राष्ट्र के



मानवाधिकार विभाग ने चिंता व्यक्त की है। भारतीय अधिकारियों को शांतिपूर्ण आंदोलन के अधिकार का आदर करना चाहिए और मनमाने ढंग से जिन लोगों को हिरासत में लिया गया है, उन्हें रिहा करना चाहिए, ऐसा आह्वान संयुक्त राष्ट्र ने किया। संयुक्त राष्ट्र के आह्वान को कोई नहीं छूटता यह सच है, लेकिन भारत में यह दमन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चिंता का विषय बना, यह महत्वपूर्ण है। कन्ग्रू यॉक टाइम्स' और लंदन के समाचार पत्रों में दिल्ली के दमन की तस्वीरें प्रकाशित करके भारत में लोकतंत्र संकट में होने का अवलोकन दर्ज किया, यह प्रधानमंत्री मोदी और उनके समर्थकों के लिए है। 10 तारीख का आंदोलन सफल न हो इसलिए छत्तीसगढ़, झारखंड, जम्मू-कश्मीर, मणिपुर में जो लाखों सरास्त्र बल आतंकवादी, नक्सलवादी आदि को रोकने के लिए तैनात थे, उन्हें दिल्ली में उतारा गया। संपूर्ण दिल्ली की सीमाओं और गलियों की नाकेबंदी कर दी गई। कृष्ण मेनन मार्ग पर स्थित गृहमंत्री अमित शाह के घर के चारों ओर लाख भर सरास्त्र बल का घेरा पड़ गया है। इंटरनेट सेवा बंद कर दी, मेट्रो पूरी तरह बंद कर दी। बसों, ट्रकों का आवागमन बंद कर दिया। दिल्ली आने वाली रेल गाड़ियों को रास्ते में ही रोक दिया। दिल्ली आने वाले विमान रोक दिद। दीपके, रांका आदि कॉंकरोच नेताओं को पुलिस ने विमान में घुसकर गिरफ्तार किया। दिल्ली का आंदोलन रोकने के लिए मोदी सरकार तानाशाही के सभी हथकंडे और औजार इस्तेमाल कर रही थी। क्योंकि सरकार की पैट गीली हो गई थी। सरकार डर से थर-थर कांप रही थी। यह सारा विरोध तोड़कर विद्यार्थी और समाज के घटक बड़ी संख्या में दिल्ली के आंदोलन में उतरे। फिर भी भाजपा के बुद्धिहीन प्रवक्ता और नेता आंदोलन विफल हुआ ऐसा कह रहे हों तो उन्हें दिमागी बुखार का दौरा पड़ा है और उस पर तुरंत इलाज होना आवश्यक है, ऐसा ही कहना पड़ेगा। मुंबई में अगस्त क्रांति मैदान की ओर निकले तुषार गांधी को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। जिस महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया और जिनकी वजह से और लोकतंत्रवादी गांधीजी का देश के रूप में विश्वविख्यात हुआ, उन गांधी के झ्रमपीत्र' को पुलिस ने सत्याग्रह करने से रोका। क्या यह फडणवीस सरकार को शोभा देता है? इतना डर किस बात का? अहिंसक मार्ग से सत्याग्रह करने वालों को जब रोका जाता है तब सरकार के शरीर में छुपा तानाशाह डर गया है, यह स्वीकार करना पड़ेगा। तुषार गांधी की रिहाई के लिए दादाभाई नौरोजी पुलिस स्टेशन जाकर आदित्य ठाकरे और शिवसेनिकों ने आंदोलन किया। यह स्वतंत्रता संग्राम की दवानल भड़कने का लक्षण है। देश की राजधानी में लोकतंत्र से भारत की छवि के टुकड़-टुकड़े हो गए हैं।

नवरत्रि पर कविता



शैलपुत्री माँ का पहला रूप, धरती पर देती है सुख और रूप। सरलता, धैर्य, शांति का संदेश, हर हृदय में भरती नवकलेश।

ब्रह्मचारिणी ज्ञान की धारा, साधना से मिटे हर अंधकार। तप और संयम की देती सीख, मनुष्य बने निर्मल, सच्चा, अधिक।

चंद्रघटा की गुंज निराली, शक्ति की प्रतीक, सुरभि मतवाली। घंटा नाद से हटे संकट सारे, माँ के चरणों में सुख अपार रे।

कृष्णान्न माँ जीवन दायिनी, सूट्टे रचयिता, अन्नप्रदायिनी। अंधकार में प्रकाश जगाती, सद्भाव, समृद्धि सबको दिलाती।

स्कंदमाता ममता की छाया, बच्चों संग प्रेम का साया। करुणा की धारा बहा देती, भक्तों के दुःख हर लेती।

कात्यायनी वीरता की मूरत, अन्याय पर बनती प्रवंड सुरत। शेर सवारी कर सहर करे, सत्य की राह पे सबको धरे।

कालरात्रि माँ भयंकर रूप, असुरों के लिए प्रलय रवरूप। भक्तों को देती निर्भयता, हर मन में जगाती दिव्यता।

महागौरी का रूप सुहावन, पवित्र, शांति, निर्मल सावन। पाप धोकर उजियारा देते, जीवन में नई दिशा भर देते।

सिद्धिदात्री वरदानों की दाती, सारे संकटों की है छुटकारा साथी। सिद्धि, ज्ञान और शक्ति देती, मुक्ति के द्वार स्वयं ही खोल देती।

नवरत्रि का यही है सार, माँ के चरणों में प्रेम अपार। भक्ति, शक्ति और सत्य की राह,

ग्राहक सिर्फ खरीदार नहीं, अधिकारों वाला नागरिक है!

अनीता यादव, संपादक

आज के दौर में बाजार पहले से कहीं अधिक व्यापक और जटिल हो गया है। ऑनलाइन खरीदारी, डिजिटल भुगतान, बैंकिंग सेवाएं, बीमा, निवेश, ई-कॉमर्स और आकर्षक विकल्पों के बीच उपभोक्ता के सामने विकल्प तो बढ़े हैं, लेकिन उसके साथ धोखाधड़ी, भ्रामक दावे, छिपे हुए शुल्क, घटती उत्पाद मात्रा, खराब सेवाओं और शिकायतों के समाधान में देरी जैसी चुनौतियां भी सामने आई हैं। ऐसे समय में उपभोक्ता अधिकारों की रक्षा केवल कानून बनाने से नहीं, बल्कि जागरूक नागरिकों, स्वतंत्र शोध, प्रभावी शिकायत निवारण और जवाबदेह बाजार व्यवस्था से संभव है। इसी उद्देश्य के साथ नैतिक बोध ट्रस्ट की पहल उपभोक्ता पंचायत पिछले दो दशकों से उपभोक्ता शिक्षा, अधिकारों, वित्तीय साक्षरता और जनहित के मुद्दों पर काम कर रही है। पंजीकृत हिंदी पत्रिका की विरासत को आगे बढ़ाते हुए यह पहल डिजिटल माध्यमों के जरिए भी उपभोक्ताओं तक उपयोगी, तथ्यपरक और विश्वसनीय जानकारी पहुंचाने का प्रयास कर रही है।

उपभोक्ता आंदोलन को अब नई ताकत की जरूरत—उपभोक्ता संरक्षण का अर्थ केवल खराब सामान बदलवाना या पैसे वापस लेना नहीं है। इसका व्यापक उद्देश्य ऐसा बाजार बनाना है, जहां ग्राहक को सही जानकारी मिले, उसके साथ भेदभाव न हो, उसकी शिकायत सुनी जाए और गलत व्यवहार करने वाली कंपनियों तथा सेवा प्रदाताओं की जवाबदेही तय हो। भारत में उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 उपभोक्ताओं को महत्वपूर्ण कानूनी अधिकार प्रदान करता है। इनमें सुरक्षा का अधिकार, सही जानकारी पाने का अधिकार, अपनी पसंद के विकल्प चुनने का अधिकार, सुने जाने का अधिकार, शिकायत निवारण का अधिकार और उपभोक्ता जागरूकता का अधिकार प्रमुख हैं। लेकिन इन अधिकारों का वास्तविक लाभ तभी मिलेगा, जब उपभोक्ता अपने अधिकारों को

समझेंगा और उल्लंघन होने पर आवाज उठाएगा। बिल न लेना, शर्तें पढ़े बिना सहमति देना, बिना जांच के ऑनलाइन भुगतान करना या शिकायत दर्ज कराने से पीछे हटना कई बार उपभोक्ता को नुकसान की स्थिति में छोड़ देता है। इसलिए उपभोक्ता आंदोलन को केवल जागरूकता



अभियान तक सीमित रखने के बजाय उसे संगठित, शोध आधारित और समाधान केन्द्रित बनाना जरूरी है।

अधिकारों की लड़ाई कैसे लड़ी जाए? पहला कदम—जानकारी और सबूत: किसी भी उत्पाद या सेवा से संबंधित शिकायत होने पर बिल, भुगतान रसीद, वारंटी, अनुबंध, विज्ञापन, ईमेल, संदेश और संबंधित स्क्रीनशॉट सुरक्षित रखें। ऑनलाइन खरीदारी में ऑर्डर विवरण और रिफंड संबंधी बातचीत भी महत्वपूर्ण साक्ष्य हो सकते हैं। दूसरा कदम—कंपनी से लिखित शिकायत:समस्या होने पर संबंधित विक्रेता, कंपनी, बैंक, बीमा संस्था या सेवा प्रदाता के शिकायत निवारण अधिकारी से संपर्क करें। शिकायत संख्या और जवाब की प्रति सुरक्षित रखें। केवल मौखिक आवागमन पर निर्भर न रहें। तीसरा कदम—सही मंच तक पहुंच: उपभोक्ता उत्पाद या सेवा से जुड़ी शिकायत के लिए राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन 1915 या उपभोक्ता आयोग के उपयुक्त मंच का सहारा ले सकते हैं। बैंकिंग, बीमा और

प्रतिभूति बाजार जैसे विनियमित क्षेत्रों में संबंधित नियामक की निर्धारित शिकायत प्रक्रिया अपनाना भी जरूरी है। डिजिटल वित्तीय धोखाधड़ी होने पर तुरंत संबंधित बैंक या भुगतान सेवा प्रदाता को सूचित करें और राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन 1930 पर संपर्क करें।



चौथा कदम—सामूहिक आवाज:जब एक ही समस्या अनेक उपभोक्ताओं के सामने आती है, तो उसका दस्तावेजीकरण, तथ्यपरक रिपोर्टिंग और सामूहिक प्रतिनिधित्व जरूरी हो जाता है। गलत विज्ञापन, अनुचित व्यापार व्यवहार, भ्रामक मूल्य निर्धारण और अनुचित शर्तों जैसे मामलों में संबंधित सरकारी संस्थाओं और नियामकों तक प्रमाण सहित मामला पहुंचाया जाना चाहिए। पांचवां कदम—कानूनी अधिकारों का उपयोग:समाधान नहीं मिलने पर उपभोक्ता आयोग में शिकायत दर्ज कराने का विकल्प उपलब्ध है। उपयुक्त मामलों में ऑनलाइन माध्यम से भी शिकायत की जा सकती है। शिकायत दर्ज करने से पहले लागू समय-सीमा, अधिकार क्षेत्र और संबंधित प्रक्रिया की जानकारी लेना महत्वपूर्ण है।

वित्तीय और डिजिटल साक्षरता क्यों जरूरी? आज उपभोक्ता की चुनौतियां बाजार तक सीमित नहीं हैं। बैंकिंग शुल्क, गलत तरीके से बेचे गए वित्तीय उत्पाद, बीमा दावों में विवाद, निवेश संबंधी भ्रामक वादे, फर्जी

लिंक और डिजिटल भुगतान धोखाधड़ी भी गंभीर विषय हैं। उपभोक्ता को किसी भी वित्तीय उत्पाद में निवेश या खरीद से पहले जोखिम, शुल्क, नियम, बहिष्करण और निकासी की शर्तें समझनी चाहिए। ओटीपी, पिन और पासवर्ड किसी के साथ साझा नहीं करने चाहिए। किसी संस्था की विश्वसनीयता केवल विज्ञापन या सोशल मीडिया के दावे के आधार पर तय नहीं करनी चाहिए। उपभोक्ता पंचायत का उद्देश्य ऐसे विषयों को सरल भाषा में समझाना, तुलनात्मक अध्ययन प्रकाशित करना, विशेषज्ञों की राय सामने लाना और उपभोक्ताओं को उपलब्ध शिकायत निवारण प्रणालियों से परिचित कराना है।

शोध, पत्रकारिता और जनभागीदारी का संगम—उपभोक्ता अधिकारों की प्रभावी रक्षा के लिए स्वतंत्र शोध और प्रमाण आधारित पत्रकारिता की अहम भूमिका है। कंपनियों के दावों, उत्पादों की गुणवत्ता, सेवा की पारदर्शिता, उपभोक्ता अनुभव और शिकायत निवारण व्यवस्था का निष्पक्ष अध्ययन बाजार में जवाबदेही बढ़ाने में मदद कर सकता है। उपभोक्ता पंचायत समाचार, शोध रिपोर्टें, तुलनात्मक अध्ययनों, विशेषज्ञ साक्षात्कारों और शैक्षिक सामग्री के माध्यम से उपभोक्ता, शोधकर्ता, नीति निर्माता, विद्यार्थी और नागरिक समाज के बीच संवाद को मजबूत करना चाहती है। इस दिशा में सरकारी संस्थानों, नियामकों, शिक्षण संस्थानों, उद्योग विशेषज्ञों और नागरिक संगठनों के साथ सहयोग भी महत्वपूर्ण है। हालांकि, किसी भी अध्ययन की विश्वसनीयता के लिए निष्पक्ष पद्धति, स्पष्ट मानदंड, प्रमाण और निष्कर्षों की पारदर्शिता अनिवार्य होनी चाहिए।

उपभोक्ता पत्रकारिता को जनआंदोलन बनाने का संकल्प:प्रमोद पंत—प्रमोद पंत, प्रबंध न्यासी, नैतिक बोध ट्रस्ट, उपभोक्ता अधिकारों, पत्रकारिता और सामाजिक विकास के क्षेत्र में 22 वर्षों से अधिक का अनुभव रखते हैं। उन्होंने हिंदुस्तान टाइम्स सहित प्रमुख मीडिया संस्थानों में काम किया है। उपभोक्ता मामलों और जनहित से जुड़े मुद्दों पर उनके अनुभव न उन्हें जटिल

विषयों को सरल भाषा में प्रस्तुत करने की विशेषज्ञता दी है। उपभोक्ता पंचायत के प्रधान संपादक के रूप में उनका जोर हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से ग्रामीण और वंचित समुदायों तक उपभोक्ता अधिकारों तथा वित्तीय जानकारी को पहुंचाने पर है। नैतिक बोध ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी के रूप में वे उपभोक्ता शिक्षा, जनहित शोध और संस्थागत विकास को आगे बढ़ाने की रणनीतिक जिम्मेदारी निभाते हैं।

वित्तीय सुरक्षा और नीति शोध पर विशेष जोर:सुभास तिवारी

सुभास तिवारी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी , नैतिक बोध ट्रस्ट, उपभोक्ता मामलों, सार्वजनिक नीति शोध और वित्तीय समावेशन के विशेषज्ञ हैं। उन्हें बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं और बीमा क्षेत्र सहित उपभोक्ता संरक्षण, क्षमता निर्माण और शिकायत निवारण के कार्यों में 18 वर्षों से अधिक का अनुभव है। उनके परित्व के अनुसार, उन्होंने 350 से अधिक शोध परियोजनाओं का नेतृत्व किया है, 3,000 से अधिक उपभोक्ता शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए हैं और सार्वजनिक नीति तथा वित्तीय सुरक्षा पर 300 से अधिक शोध लेख लिखे हैं। सरकारी संस्थानों, नियामकों और शैक्षणिक संगठनों के साथ उनका अनुभव उपभोक्ता-केंद्रित नीतिगत सुझावों और वित्तीय जागरूकता पहलों को आगे बढ़ाने में उपयोगी है।

लक्ष्य—जागरूक उपभोक्ता, जवाबदेह बाजार

उपभोक्ता अधिकारों की लड़ाई किसी एक व्यक्ति, संस्था या कानून के भरसे नहीं जीती जा सकती। इसके लिए जागरूक नागरिक, जिम्मेदार कंपनियां, निष्पक्ष मीडिया, प्रभावी नियामक और सुलभ न्याय व्यवस्था—सभी की भागीदारी आवश्यक है। उपभोक्ता पंचायत का संकल्प है कि जानकारी को अधिकार की ताकत बनाया जाए, शिकायत को समाधान से जोड़ा जाए और शोध को नीतिगत सुधार का आधार बनाया जाए। क्योंकिसरासृत उपभोक्ता केवल अपने पैसे की रक्षा नहीं करता, वह बाजार में ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही की संस्कृति को भी मजबूत करता है।

लोकतंत्र में विरोध का अधिकार और न्यायपालिका की भूमिका

पैदा होती है, तब नागरिक अधिकारों की रक्षा और कानून का पालन सुनिश्चित करना प्रशासन के लिए बड़ी चुनौती बन जाता है। दिल्ली में निर्वाचन प्रक्रिया को लेकर हुए विरोध प्रदर्शनों के बीच सर्वोच्च न्यायालय का हस्तक्षेप इसी संविर्भ में महत्वपूर्ण है। 10 अक्टूबर 2026 को दिल्ली में मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर विरोध प्रदर्शन का आह्वान किया गया था। प्रदर्शनकारियों और विपक्षी दलों ने निर्वाचन प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं को लेकर सवाल उठाए। उनका आरोप था कि मतदाता सूची में बदलाव की प्रक्रिया से कुछ वर्गों के मतदाताओं के अधिकार प्रभावित हो सकते हैं। दूसरी ओर, निर्वाचन आयोग ने प्रक्रिया में पक्षपात के आरोपों को खारिज किया है। सत्तारूढ़ दल ने भी विपक्ष के आरोपों पर आपत्ति जताई है। इसलिए इस पूरे विवाद में आरोपों, आधिकारिक स्पष्टीकरणों और प्रमाणित तथ्यों को अलग-अलग समझना आवश्यक है। प्रदर्शन के मद्देनजर दिल्ली के कई हिस्सों में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई। मेट्रो स्टेशनों को बंद करने, आवागमन सीमित करने और इंटरनेट सेवाओं पर प्रतिबंध लगाने जैसे कदमों की खबरें सामने आईं। बड़ी संख्या में लोगों को हिरासत में लिए जाने की सूचना भी मिली। इन कदमों से केवल प्रदर्शनकारियों की गतिविधियां प्रभावित नहीं हुईं, बल्कि आम नागरिकों की आवाजाही, दैनिक कामकाज और सार्वजनिक परिवहन पर भी असर पड़ा। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक था कि सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए किए गए प्रबंध किस सीमा तक आवश्यक और उचित थे। इसी पृष्ठभूमि में 11 अक्टूबर 2026 को सर्वोच्च न्यायालय ने विशेष सुनवाई करते हुए अधिकारियों को कई महत्वपूर्ण अंतरिम निर्देश दिए। न्यायालय ने कहा कि शांतिपूर्ण और हिंरह्ये लोगों को कानून में निर्धारित प्रक्रिया के बिना हिरासत में नहीं लिया जाना चाहिए। उसने मेट्रो और रेल सेवाओं को सामान्य रूप से चलाने,

शहर में यातायात नियमों के अधीन लोगों की आवाजाही सुनिश्चित करने तथा इंटरनेट सेवाओं को अनावश्यक रूप से बाधित न करने पर जोर दिया। न्यायालय ने सड़कों पर लगाए गए अवरोधों की तत्काल समीक्षा करने और अदालतों तक लोगों की पहुंच सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए। इन निर्देशों के साथ यह स्पष्ट रखा गया कि सार्वजनिक व्यवस्था की वास्तविक आवश्यकता होने पर कानून के अनुसार उचित प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। इस घटनाक्रम का महत्व इसलिए भी है कि संविधान नागरिकों को केवल अधिकार ही नहीं देता, बल्कि शासन की शक्तियों की सीमाएं भी निर्धारित करता है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19 नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और शांतिपूर्वक तथा बिना हथियारों के एकत्र होने का अधिकार प्रदान करता है। ये अधिकार लोकतंत्र में नागरिक सहभागिता का आधार हैं। हालांकि, इन पर संविधान में निर्धारित आधारों पर उचित प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। इसलिए विरोध करने की स्वतंत्रता का अर्थ कानून से ऊपर होना नहीं है और न ही सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने का अर्थ नागरिकों के अधिकारों को मनमाने ढंग से सीमित करना है। प्रशासन की जिम्मेदारी है कि वह संपावित हिंसा, यातायात अवरोध और सार्वजनिक संपत्ति को होने वाले नुकसान से बचाने के लिए आवश्यक कदम उठाए। लेकिन किसी संभावित खतरे की आशंका के आधार पर सभी लोगों की आवाजाही रोक देना या शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों को बिना वैधानिक आधार के हिरासत में लेना उचित नहीं माना जा सकता। प्रतिबंधों का औचित्य, उनकी अवधि और उनका दायरा परिस्थितियों के अनुरूप होना चाहिए। जहां सीमित व्यवस्था से समस्या का समाधान संभव हो, वहां व्यापक प्रतिबंधों के कारण आम नागरिकों को अनावश्यक परेशानी में डालने से बचना चाहिए। दिल्ली जैसे महानगर में मेट्रो और रेल सेवाएं केवल यातायात के साधन नहीं हैं। लाखों लोग प्रतिदिन इन सेवाओं के माध्यम से अपने कार्यस्थलों, शिक्षण संस्थानों,

अस्पतालों और अन्य आवश्यक स्थानों तक पहुंचते हैं। अचानक परिवहन सेवाएं बंद होने से विद्यार्थियों की पढ़ाई, कर्मचारियों की उपस्थिति, मरीजों की चिकित्सा और छोटे कारोबारियों की आजीविका प्रभावित हो सकती है। इसी प्रकार इंटरनेट सेवाएं आज शिक्षा, बैंकिंग, व्यापार, संचार और आपातकालीन सहायता का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इसलिए इनके व्यापक प्रतिबंध का प्रभाव प्रदर्शन स्थल से कहीं अधिक दूर तक पहुंचता है। इस संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका केवल किसी एक प्रदर्शन को लेकर आदेश देने तक सीमित नहीं है। न्यायपालिका का दायित्व यह सुनिश्चित करना भी है कि प्रशासनिक कार्रवाई संविधान और कानून के अनुरूप हो। जब नागरिकों को लगता है कि उनके अधिकार प्रभावित हो रहे हैं, तब न्यायालय से राहत की अपेक्षा लोकतांत्रिक व्यवस्था का स्वाभाविक हिस्सा है। हालांकि, न्यायिक हस्तक्षेप का अर्थ यह नहीं है कि किसी विवाद में एक पक्ष के सभी आरोप स्वतः सिद्ध हो गए। न्यायालय के अंतर्निम निर्देश, प्रारंभिक टिप्पणियां और अंतिम निर्णय अलग-अलग प्रक्रियाएं हैं। दिल्ली के मामले में भी अधिकारियों से जवाब और अनुपालन संबंधी जानकारी मांगी गई है। इसलिए अंतिम निष्कर्ष तथ्यों, प्रस्तुत साक्ष्यों और आगे की न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर ही निकाला जाना चाहिए।

निर्वाचन प्रक्रिया से संबंधित विवाद का एक व्यापक पक्ष जनता का विश्वास है। चुनाव लोकतंत्र की बुनियादी प्रक्रिया है और मतदाता सूची उनकी विश्वसनीयता का महत्वपूर्ण आधार है। मतदाता सूची का पुनरीक्षण आवश्यक हो सकता है, क्योंकि समय के साथ मृत्यु, स्थान परिवर्तन और अन्य कारणों से अप्रिलेखों में बदलाव करना पड़ता है। लेकिन इस प्रक्रिया में किसी पात्र नागरिक का नाम गलत तरीके से हटना उसके मताधिकार को प्रभावित कर सकता है। इसलिए सूची में संशोधन करते समय पारदर्शिता, स्पष्ट मानदंड, उचित सूचना और शिकायतों के निवारण की प्रभावी व्यवस्था जरूरी है।

राजनीतिक दलों और नागरिकों की आपत्तियों का समाधान प्रमाणों के आधार पर होना चाहिए। विरोध प्रदर्शन भी लोकतंत्र में संवाद का माध्यम है। नागरिक जब किसी निर्णय से असहमत होते हैं, तो शांतिपूर्ण ढंग से अपनी मांग रखना उनका संवैधानिक अधिकार है। साथ ही प्रदर्शन आयोजित करने वालों का दायित्व है कि वे कानून का पालन करें, हिंसा से बचें और दूसरे नागरिकों के अधिकारों का सम्मान करें। प्रशासन को भी प्रदर्शनकारियों के साथ संवाद स्थापित करना चाहिए, ताकि तनाव कम किया जा सके और सार्वजनिक सुविधाएं बाधित न हों। दोनों पक्षों की जिम्मेदारी और समय से ही ऐसी परिस्थितियों का समाधान संभव है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि लोकतांत्रिक असहमति को केवल कानून-व्यवस्था की समस्या के रूप में न देखा जाए। असहमति किसी भी जीवंत लोकतंत्र का स्वाभाविक अंग है। उसी प्रकार, हर विरोध को स्वतः उचित मान लेना भी पर्याप्त नहीं है। उसकी प्रकृति, उद्देश्य और तरीके का मूल्यांकन कानून तथा तथ्यों के आधार पर किया जाना चाहिए। सरकार, प्रशासन, निर्वाचन आयोग, राजनीतिक दल और नागरिक समाज सभी की भूमिका महत्वपूर्ण है। दिल्ली में सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप से एक बार फिर यह संदेश सामने आया है कि सार्वजनिक व्यवस्था और नागरिक स्वतंत्रता को परस्पर विरोधी मानकर नहीं चलना चाहिए। कानून का उद्देश्य अधिकारों को समाप्त करना नहीं, बल्कि उनका संरक्षण करते हुए समाज में व्यवस्था बनाए रखना है। लोकतंत्र की वास्तविक मजबूती तब दिखाई देती है, जब नागरिक बिना भय के अपनी बात रख सकें, प्रशासन निष्पक्षता से अपने दायित्व निभाए और न्यायपालिका आवश्यकता पड़ने पर संवैधानिक सीमाओं की रक्षा करे। विरोध की आवाज सुनना, असहमति का सम्मान करना और कानून का समान रूप से पालन सुनिश्चित करना ही एक उत्तरदायी लोकतांत्रिक व्यवस्था की पहचान है।

भरोसे पर भी खरे उतरे सेलिब्रिटिज

विज्ञापनों के प्रति सेलिब्रिटिज की जवाबदेही को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की हालिया टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है कि अपने उत्पादों को बेचने के लिए सेलिब्रिटिज का उपयोग सबसे अधिक किया जाता रहा है। विज्ञापनदाता जानते हैं कि लक्षित उपभोक्ता तक पहुंचने में सेलिब्रिटिज की भागीदारी महत्वपूर्ण हो जाती है। लोग सेलिब्रिटिज पर विश्वास करते हैं और विज्ञापनदाता कंपनियां इसी का लाभ अपने उत्पादों को बाजार दिलाने में करते आये हैं। इसीलिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की टिप्पणी कि सच्चा सितारा रोशनी फैलाता है, अंधेरापन नहीं, आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण होने के साथ ही सितारों और सेलिब्रिटिज को समाज के प्रति जवाबदेही समझने का संकेत भी है। दर असल हो रहा है कि पैसे की चकाचौंध में सेलिब्रिटिज समाज के प्रति जवाबदेही से मुहं मोड़ते दिखाई देते हैं। जब आम जन को सेलिब्रिटिज का भरोसा है तो सेलिब्रिटिज की भी इस भरोसे को बनाए

रखने की नैतिक जिम्मेदारी हो जाती है। दरअसल सेलिब्रिटिज को उत्पाद के साथ देखकर आमआदमी आंख मींच कर भरोसे के सहारे खरीदारी करता है। वह उस उत्पाद और सेलिब्रिटिज द्वारा किये जा रहे वादे को सत्य समझता है। ऐसे में सेलिब्रिटी का समाज या लक्षित वर्ग के प्रति और अधिक जिम्मेदारी बन जाती है। विक्रेता या निर्माता अपने उत्पाद को बेचने पर ध्यान देता है। इसलिए वह अपने उत्पाद के गुणगान अधिक ही करने लगता है तो सेलिब्रिटी के विचारों के सहारे अतिशयोक्तिपूर्ण दावें करने लग जाते हैं। यहां तक कि कई विज्ञापन के दावों तो सत्य के आसपास भी नहीं होते जैसा कि अश्वय कुमार का डॉबर च्यवनप्राश को लेकर विज्ञापन। यह तो एक उदाहरण मात्र है। आज तो सेरेगेट विज्ञापनों का दौर भी चल



निकला है। शाहरुख खान, अजय देवगन और टाइगर श्राप का इलायची का विज्ञापन सबके सामने है जिसके माध्यम से छ्द्य रुप से प्रतिबंधित पान मसाला का विज्ञापन किया जा रहा था। इसी तरह के अनेक विज्ञापन हमारे सामने हैं। हालांकि इसमें कोई दो राय नहीं कि निर्माता अपने उत्पाद का औचित्य, उनकी अवधि के लिए सेलिब्रिटिज को बहुत अधिक पेमेंट किया जाता है और इस पेमेंट के चक्कर में सेलिब्रिटिज समाज के प्रति अपने दायित्व और कानूनी प्रावधानों को भी दरकिनार कर देते हैं। यही कारण है कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने दुखती राग पर हाथ रखते हुए 72 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में पिछले माह सितंबर में आयोजित समारोह में आमआदमी का दर्द सामने रखा। विवादित विज्ञापनों का दौर लंबे समय से चला आता रहा है। इसमें ही कोई दो

राय नहीं कि अपने उत्पाद को बेचने के लिए सेलिब्रिटिज, महिलाओं और बच्चों को केन्द्र में रखा जाता है। दरअसल लक्षित वर्ग को समोहित करना इन विज्ञापनों का खास उद्देश्य हो जाता है। विज्ञापन करते समय कई बार तो सांप्रदायिकता तक सामने आ जाती है। 2020 का तनिक का विज्ञापन इसका उदाहरण है तो 2026 का कृति सेनन का गीवा ज्वेलरी का विज्ञापन सामने है। विमल इलायची का फिल्म कलाकर त्रय का विज्ञापन सर्वव्दित है जिसमें इलायची के नाम पर छ्द्य रुप से पान मसाला तंबाकू का ही विज्ञापन था। इस तरह के सेरेगेट विज्ञापन आम होते जा रहे हैं। लेविस 501 जिस का अश्वय कुमार का विज्ञापन, 2021 का आलिया भट्ट का कन्यदान के बहाने कन्यकान विज्ञापन यह फिर 1995 में अजरार से जिसम को लपेटे मिलिंद सोयन और मधु स्रे का टफ जूते का विज्ञापन का विवाद आज तक चर्चा में है। 2026 का विक्की कीशोर-रश्मिका संधाना का

माचो अंडरवियर का विज्ञापन भी विवादों में रहा है। विज्ञापनों को लेकर सरकार भी गंभीर रही है। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 द्वारा जवाबदेही तय की गई है। 10 लाख से 50 लाख तक के जुर्माने के प्रावधान के साथ ही ऐसे विज्ञापनकर्ताओं पर एक साल से तीन साल तक प्रतिबंध के प्रावधान भी है। भ्रामक विज्ञापनों को लेकर माननीय सर्वोच्च न्यायालय भी गंभीर रहा है और समय समय पर टिप्पणियां की गई है। इस दायरें में चार लाख से अधिक कमाई वाले व 5 लाख फालोवर्स वाले सेलिब्रिटिज को रखा गया है। हालत की गंभीरता को इसी से समझना होगा कि फिल्म कलाकारों के समावह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को इस तरह का संदेश देना पड़ा। वैसे भी जिस पर भरोसा होता है या किया जाता है तो भरोसे वाले व्यक्ति पर भी भरोसे को बनाये रखने का दायित्व हो जाता है। विज्ञापननिर्माताओं की भी समाज के प्रति दायित्व को समझना होगा तभी सभी अपने भरोसे पर खरे उतर सकते हैं।

संक्षिप्त डायरी

वाराणसी से हरिद्वार तक, शारदीय नवरात्रि के पहले

दिन मां के दरबार में उमड़ा आस्था का सैलाब

एजेंसी

वाराणसी,। शारदीय नवरात्रि 2026 के पहले दिन देशभर के शक्ति पीठों और देवी मंदिरों में भक्तों की भारी भीड़ देखने को मिल रही है। पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा का विधान है। इस अवसर पर वाराणसी के मां शैलपुत्री मंदिर, अयोध्या के छोटी देवकाली मंदिर और हरिद्वार के मां मनसा देवी मंदिर में रविवार सुबह से ही श्रद्धालु दर्शन के लिए कतारों में लगे रहे। उत्तर प्रदेश के वाराणसी स्थित मां शैलपुत्री मंदिर में तड़के से ही भक्तों की लंबी कतारें देखी जा रही है। इसके बावजूद श्रद्धालुओं में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। इस दौरान श्रद्धालु रिकू सेंट ने आईएसएस से बातचीत में कहा, ह्रहम व्रत रखते हैं और विधि-विधान से पूजा करते हैं। आज दर्शन करने आए हैं। शैलपुत्री मंदिर में बहुत ज्यादा भीड़ है। बस मां के दर्शन मिल जाएं, वही बहुत है।ह वाराणसी की रहने वाली श्रद्धालु संध्या सिंह ने बताया, हम्रै पहले दिन कलश स्थापना करती हूं। मैं कई सालों से शैलपुत्री माता की पूजा कर रही हूं। उन्हीं की कृपा से मैंने वाराणसी में दो जगह अपना मकान बनवाया है। मेरा गांव भी यहीं है और सब कुछ मां के आशीर्वाद से बहुत अच्छे चल रहा है।ह एक अन्य श्रद्धालु पूजा पांडे ने कहा, ह्आज नवरात्रि और मां शैलपुत्री का पहला दिन है। हम दर्शन के लिए आए हैं। पहले दिन पूजा-पाठ और कलश स्थापना की जाती है और व्रत रखा जाता है। मैं यहां पहली बार आई हूं। भीड़ अच्छी-खासी है लेकिन दर्शन आराम से और बहुत अच्छे से हो गए।ह नवरात्रि के पहले दिन अयोध्या में भी आस्था का सैलाब उमड़ा। यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु अपने परिवार की कुलदेवी मां छोटी देवकाली मंदिर में पूजा-अर्चना के लिए आए रहे हैं। सुबह से ही मंदिर परिसर में भक्तों की भीड़ लगी हुई है। वहीं, उत्तराखंड के हरिद्वार में स्थित मां मनसा देवी मंदिर में भी उत्सव का मोहल देखने को मिल रहा है। सुबह से भक्त लाइनों में लगकर माता रानी के दर्शन कर रहे हैं। पुलिस-प्रशासन द्वारा सुरक्षा व्यवस्था के विशेष इंतजाम किए गए हैं।

एफएसएसएआई ने राम मंदिर को दिया ईट राइट प्लेस

ऑफ वरशिप सर्टिफिकेट, प्रसाद की शुद्धता पर मुहर

एजेंसी

अयोध्या। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) की ओर से भगवान श्री रामलला को चढ़ाए जाने वाले प्रसाद की शुद्धता पर मुहर लगा दी गई है। एफएसएसएआई ने आधिकारिक तौर पर श्री राम जन्मभूमि मंदिर को ईट राइट प्लेस ऑफ वरशिप प्रमाणपत्र दिया है। एफएसएसएआई के सीईओ रजित पुन्हानी ने अयोध्या में एक खास समारोह के दौरान यह सर्टिफिकेट सौंपा है। एफएसएसएआई की ओर से जारी यह सर्टिफिकेट दो वर्ष के लिए मान्य है। अयोध्या के श्री राम मंदिर ने ईट राइट प्लेस ऑफ वरशिप का दर्जा हासिल करने के लिए, फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एफएसएसएआई) द्वारा तय किए गए साफ-सफाई और खाने की सुरक्षा के कड़े मानकों को सफलतापूर्वक पूरा किया है। एफएसएसएआई के ईट राइट प्लेस ऑफ वरशिप पहल से देशभर में धार्मिक स्थलों पर साफ-सुथरे और पौष्टिक भोजन के तौर-तरीकों को बढ़ावा देना है। धार्मिक स्थलों पर काफी मात्रा में भगवान को चढ़ाए जाने वाले प्रसाद को श्रद्धालुओं में बांटा जाता है। ऐसे में इन स्थलों पर भोजन को साफ तरीके से रखा जाना भी काफी आवश्यक हो जाता है। इस सर्टिफिकेट से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि एफएसएसएआई के मानकों को पूरा किया है। राम मंदिर को यह सर्टिफिकेट मिलना इस बात का संकेत है कि राम मंदिर की ओर से इस पहल से जुड़ी शतों को पूरा किया गया है। एसएसएआई की ओर से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट करके लिखा गया, अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र को एफएसएसएआई ने आधिकारिक तौर पर ईट राइट प्लेस ऑफ वरशिप के तौर पर सर्टिफाई किया है। यह सर्टिफिकेट अयोध्या में एक खास समारोह के दौरान एफएसएसएआई के सीईओ रजित पुन्हानी ने सौंपा।

बुलंदशहर में भूरा गैंग का एनकाउंटर : सरगना समेत पांच पशु चोर गिरफ्तार, दो बदमाश घायल

एजेंसी

बुलंदशहर। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के गुलावठी में पुलिस और स्वाट टीम की पशु तस्करों के साथ मुठभेड़ हो गई। इस दौरान पुलिस की गोली लगने से गैंग सरगना शहजाद और शाहरुख घायल हो गए। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से दो तमंचे, तीन चाकू, कारतूस, एक वाहन, चोरी की दो बैस और 95 हजार रुपये की नकदी बरामद की है। सीओ प्रखर पांडे के मुताबिक, शनिवार देर रात एक बजे गुलावठी पुलिस और स्वाट टीम जितिवठी क्षेत्र के पास हाईवे पर चेकिंग कर रही थीं। इसी दौरान एक सदिस्थ वाहन आता दिखाई दिया। पुलिस ने वाहन को रुकने का इशारा किया लेकिन चालक ने वाहन रोकने के बजाय उसकी रफ्तार बढ़ा दी। इसके बाद पुलिस टीम ने सदिस्थों का पीछा किया। इस दौरान उन्होंने पुलिस पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई करते हुए पुलिस ने मुठभेड़ के दौरान गैंग के सरगना शहजाद उर्फ भूरा, उसके मुख्य सहयोगी शाहरुख मेवाती समेत पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, कार्रवाई के दौरान घिरे दो आरोपियों के पैर में गोली लगी। इसके बाद पुलिस ने घायल आरोपियों को हिरासत में लेकर उनके तीन अन्य साथियों को भी गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने आरोपियों के पास से पशु चोरी में इस्तेमाल होने वाले सामान और चोरी की गई बैसें भी बरामद की हैं। पुलिस के अनुसार, गिरफ्तार आरोपियों में शहजाद उर्फ भूरा निवासी थाना मुंडाली, मेरठ; शाहरुख मेवाती निवासी नौरंगाबाद, मोहरू नगला, थाना पलवल, हरियाणा; फैसल निवासी चौधरीबाड़ा, सिकंदराबाद; शरीफ निवासी सिकंदराबाद और रिजवान निवासी जलीलपुर, थाना जहांगीराबाद शामिल हैं। पुलिस के मुताबिक, गैंग सरगना शहजाद उर्फ भूरा वर्ष 2012 से आतंरिक गतिविधियों में सलियत रहा है। उसके खिलाफ पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विभिन्न थानों में 32 मुकदमे दर्ज हैं। वहीं, शाहरुख मेवाती पर आठ, फैसल पर सात, शरीफ पर 19 और रिजवान पर सात मुकदमे दर्ज बताए गए हैं। इस कार्रवाई में गुलावठी कोतवाली प्रभारी धर्मेद शर्मा, कस्बा ईंचाज आनंद कुमार, नई मंडी चौकी प्रभारी उषेंद्र यादव और उनकी पुलिस टीम के साथ स्वाट टीम प्रभारी मोहम्मद असलम व उनकी टीम शामिल रही। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर पशु चोरी की अन्य वारदातों के संबंध में जानकारी जुटा रही है।

भदोही में साइबर अपराध के प्रति जागरूक करने वाली महिला कांस्टेबल खुद ठगी का शिकार हुई

एजेंसी

भदोही,। भदोही में स्कूलों और कॉलेजों में विद्यार्थियों को साइबर अपराध के प्रति जागरूक करने वाली एक महिला कांस्टेबल खुद कथित तौर पर ठगी का शिकार हो गई और जालसाजों ने उनके बैंक खाते से चार लाख रुपये से अधिक की रकम निकाल ली। एक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि शहर कोतवाली में तैनात महिला कांस्टेबल शामली देवी की शिकायत के आधार पर शनिवार देर शाम भारतीय न्याय संहिता और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की प्रासंगिक धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है।शहर कोतवाली के प्रभारी शैलेश कुमार राय ने बताया कि शामली देवी ने चार अक्टूबर को भदोही में महिला रोग विशेषज्ञ के बारे में गूगल पर जानकारी खोजी थी

हिन्दी समारोह में साहित्यकारों और मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान

एजेंसी हरिद्वार। श्रवण सेवा एवं शोध संस्थान, हरिद्वार तथा अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी सेवा के संयुक्त तत्वावधान में श्रीकृष्ण कृपा धाम, भीमगोड़ा में हिन्दी समारोह का आयोजन किया गया। गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द महाराज के सान्निध्य में आयोजित समारोह में हिन्दी भाषा के संरक्षण, संवर्धन और भारतीय संस्कृति में उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर हिन्दी सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले साहित्यकारों और हिन्दी विषय में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता पूर्व कुलपति प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य विकास अधिकारी डॉ. ललित नारायण मिश्र उपस्थित रहे। डॉ. पुष्पारानी ने संयोजिका तथा वरिष्ठ



साहित्यकार एवं समाजसेविका श्रीमती रेखा सिंघेल ने सहसंयोजिका की भूमिका निभाई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक गिरि ने किया। समारोह में डॉ. सुशील त्यागी, डॉ. बीना वशिष्ठ और लक्ष्मी डबराल की

हहिन्दी सेवा सम्मानहू से सम्मानित किया गया। वहीं, शिखा सिंघल की गद्य विधा में रचित रेखाचित्र की पुरस्कृत किया गया। हाईस्कूल की परीक्षा में हिन्दी विषय में सर्वोधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को

भी सम्मानित कर प्रोत्साहित किया गया। हिन्दी के साथ अन्य भाषाओं का ज्ञान भी जरूरी वक्तोंओं ने हिन्दी को भारतीय संस्कृति, परंपरा और सामाजिक एकता का महत्वपूर्ण आधार बताया। डॉ. अशोक गिरि ने

मोनोपोली दवाओं से डॉक्टर मालामाल, मरीजों की जेब खाली, वसूल रहे मनमाना पैसा

एजेंसी

कानपुर शहर के निजी अस्पतालों और क्लीनिकों में दवाओं की मोनोपोली यानी एकाधिकार का खेल इस समय चरम पर है। डॉक्टर और स्थानीय दवा निर्मातों साल्ट में मामूली बदलाव करके नए नाम से दवा बनवाते हैं। ये दवाएं इन्हें अस्पतालों के मेडिकल स्टोरों और कुछ चुनिंदा दुकानों पर ही मिलती हैं। 10 टेबलेट की जो स्ट्रिप महज 50 रुपये में मिलनी चाहिए, वह यहां पर 250 से 270 रुपये में घड़ल्ले से बेची जा रही है। ड्रा एक्ट की धमियां उड़ाकर ये अस्पताल-क्लीनिक मरीजों को सरेआम लूट रहे हैं। संवाद न्यूज एजेंसी की टीम ने शहर के प्रमुख मेडिकल कॉलेजों, निजी क्लीनिकों, अस्पतालों और उनके बाहर स्थित मेडिकल स्टोरों का रियलिटी चेक किया तो ये चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। चिकित्सा संस्थानों के आसपास फैले दवा बाजार, स्वरूपनगर, काकादेव और सर्वोदयनगर स्थित निजी क्लीनिकों व अस्पतालों में मरीजों के साथ डर का कारोबार किया जा रहा है। आईसीयू में भर्ती रोगियों के लिए 10 से 15 हजार



रुपये की दवाएं मंगाई जाती हैं जबकि बाहर वही दवा चार से पांच हजार रुपये में मिल सकती है। इस पूरे गठजोड़ का सीधा असर उन गरीब व मध्यवर्गीय परिवारों पर पड़ रहा है जो ग्रामीण इलाकों से इलाज कराने कानपुर आते हैं। सामान्य वायरल या पेट दर्द के इलाज में 200 से 300 रुपये की जेनेरिक या प्रसिद्ध ब्रांडेड दवाओं से काम चल जाता है। मोनोपोली दवाओं के कारण यह खर्च 1200 से 1500 रुपये तक पहुंच रहा है। यदि मरीज किसी अन्य मेडिकल स्टोर पर जाता है तो दुकानदार पचां देखकर साफ कह देता है कि इस साल्ट की दवा नहीं है। मजबूरी में

इन्हें अस्पतालों और चुनिंदा मेडिकल स्टोरों से तीमारदार को दवा लेनी पड़ती है। अगर कोई रोगी का तीमारदार को जानकारी है भी और वह साल्ट के आधार पर बाहर से दवा लाने की जिद करता है तो अस्पताल के जिम्मेदार कहते हैं कि सादे काजज पर लिखकर दो कि अगर आपके रोगी को कुछ हो जाएगा तो जिम्मेदारी आपकी होगी। डर के चलते मजबूरी में रोगी वहीं से दवा खरीदने को मजबूर हैं। ड्रा विभाग और स्वास्थ्य प्रशासन के ढुलमुल रवैये के कारण यह नेटवर्क दिन-प्रतिदिन मजबूत होता जा रहा है। नियमों के मुताबिक डॉक्टरों को

रेस्टोरेंट में बवाल करने वाले सिपाही और दरोगा निलंबित, विभागीय जांच शुरू

दरोगा निलंबित, विभागीय जांच शुरू

एजेंसी

कानपुर स्वरूप नगर क्षेत्र के रेस्टोरेंट में हंगामे के मामले में एसीपी की जांच रिपोर्ट पर कार्रवाई की गई। दोनों पुलिसकर्मों प्रथम दृष्टया दोषी मिले। स्वरूप नगर थाना क्षेत्र में रेस्टोरेंट के अंदर हंगामा और कर्मचारियों से मारपीट के आरोपों के मामले में पुलिस विभाग ने कार्रवाई की है। प्रकरण में प्रथम दृष्टया दोषी पाए जाने पर सिपाही आदित्य यादव और दरोगा रजनीश भाठी को निलंबित कर दिया गया है। दोनों के खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू करा दी गई है। सिपाही आदित्य यादव एसीपी घाटमपुर कृष्णकांत यादव का हमराही है,



जबकि दरोगा रजनीश भाठी बेगमगंज थाने में तैनात है। मामले की जांच एसीपी स्वरूप नगर ज्योतिष श्री ने की थी। उन्होंने अपनी जांच रिपोर्ट डीसीपी सेंट्रल अतुल कुमार श्रीवास्तव को सौंपी।

एजेंसी बलरामपुर

यूपी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि नारी को सम्मान, सुरक्षा और स्वावलंबन मिलेगा तो रामराज्य की स्थापना को कोई ताकत नहीं रोक सकती। मां भगवती की आराधना का वास्तविक अर्थ भी यही है कि समाज हर महिला के सम्मान और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हो। वर्ष 2017 से पहले प्रदेश में हर पांचवीं बेटी स्कूल में दाखिला लेने के बाद बीच में ही पढ़ाई छोड़ देती थी। स्कूलों में शौचालय और पेयजल जैसी सुविधाएं नहीं थीं। आज प्रदेश के 1.60 करोड़ बच्चों को हर साल दो यूनiform, बैग, पुस्तकें, स्वेटर और जूते-मोजे उपलब्ध कराए जा रहे हैं। बेटियों की शिक्षा और महिलाओं का स्वावलंबन सरकार की प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री योगी रविवार की देवीपान मंदिर प्रांगण में शारदीय नवरात्रि की प्रतिपदा और अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस पर अमेोजित हारिशा की उद्घाटनह पहल के तहत स्टडी टेबल एवं आशीर्वाद पत्र वितरण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने नवदुर्गा

स्वरूप नौ कन्याओं का तिलक किया, चुनरी ओढ़ाई और चॉकलेट भेंट की। बेटियों को सम्मानित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति की उपासना की परंपरा रही है। नवरात्रि इसी संकल्प को मजबूत करने का अवसर है। उन्होंने प्रदेशवासियों को नवरात्रि की शुभकामनाएं दीं और विजयदशमी पर भगवान राम के विजय उत्सव को भव्यता से मनाने की बात कही। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि 2017 में सरकार बनने के बाद उन्होंने बड़ी संख्या में बेटियों के स्कूल छोड़ने की वजह पूछी। पहले विद्यालयों की दूरी को कारण बताया गया। जांच के लिए टीम गठित की तो सामने आया कि स्कूलों में शौचालय और पेयजल तक की व्यवस्था नहीं थी। इसके बाद बालक बालिकाओं के लिए अलग शौचालय बनवाने, पेयजल उपलब्ध कराने और मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता सुधारने के निर्देश दिए। उस समय 60 से 70 प्रतिशत बेटियां नंगे पैर स्कूल जाती थीं। कई बच्चों के पास सदि्यों में स्वेटर तक नहीं होते थे। सरकार ने बच्चों को यूनiformें, जूते-मोजे

और अन्य सुविधाएं देने की व्यवस्था शुरू की। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि औपराशन कायकल्प से सरकारी विद्यालयों की तस्वीर बदली जा रही है। स्कूलों में बेहतर फर्श और फर्नीचर के साथ स्पाट क्लास और डिजिटल लाइब्रेरी विकसित हो रही हैं। जिन बच्चों की पहुंच कभी कंप्यूटर तक नहीं थी, वे भी आधुनिक शिक्षा से जुड़ रहे हैं। उन्होंने आकांक्षी जनपद में मंडलायुक्त और जिला प्रशासन की स्टडी टेबल वितरण पहल की सराहना की। कहा कि विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा, जब शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कृषि और स्वावलंबन का लाभ बिना भेदभाव हर वर्ग तक पहुंचेगा। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री आवास योजना में धनराशि पर की महिला मुखिया के नाम जाएंगी। भूकान का मालिकाना अधिकार भी उसी का होगा। उज्ज्वला योजना में गैस कनेक्शन महिलाओं के नाम दिए जा रहे हैं। एक करोड़ से अधिक परिवारों की मिली घरौनी में महिला सदस्यों को मालिकाना अधिकार मिला है।

समृद्ध किसान सशक्त उत्तराखण्ड, अभियान के तहत हल्द्वानी पहुंचा कृषक रथ

एजेंसी हल्द्वानी। समृद्ध किसान, सशक्त उत्तराखण्ड: हल्द्वानी पहुंचा कृषक रथ, पूर्व मंत्री बंशीधर भगत ने किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए किया प्रेरित हल्द्वानी (नैनीताल)। राज्य सरकार द्वारा संचालित सेवा संकल्प अभियान के तहत उत्तराखंड के किसानों को जागरूक करने और कृषि क्षेत्र में आधुनिक व सतत तकनीकों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से निकाला जा रहा समृद्ध किसान, सशक्त उत्तराखण्ड कृषक रथ रविवार को नैनीताल जिले के प्रमुख व्यावसायिक व सांस्कृतिक केंद्र हल्द्वानी पहुंचा। इस अवसर पर आयोजित एक भव्य व गरिमान्वय कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों, कृषि वैज्ञानिकों और बड़ी संख्या में क्षेत्र के प्रगतिशील

किसानों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय विधायक एवं पूर्व कृषि मंत्री बंशीधर भगत ने शिरकत की। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को पारंपरिक रासायनिक खेती के दुष्प्रभावों से अवगत कराना, प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना तथा सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न जनकल्याणकारी और डिजिटल योजनाओं से जोड़ना था। 1. प्राकृतिक एवं रसायनमुक्त खेती पर विशेष जोर समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि बंशीधर भगत ने उपस्थित जनसमूह को प्राकृतिक खेती के महत्त्व और इसके दूरगामी फायदों के बारे में विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि विगत कुछ दशकों में अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से भूमि की प्राकृतिक उर्वरता पर प्रतिकूल

प्रभाव पड़ा है। उन्होंने किसानों से भावुक अपील करते हुए कहा: अगर हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को उपजाऊ भूमि, स्वच्छ जल और बीमारियों से मुक्त वातावरण देना है, तो हमें पुनः अपनी पारंपरिक और जैविक पद्धतियों की ओर लौटना होगा। 'गो-आधारित' और रसायनमुक्त प्राकृतिक खेती न केवल मिट्टी के स्वास्थ्य को सुधारेगी, बल्कि उत्पादन लागत को घटाकर किसानों की कुल आय में वृद्धि करने में सबसे कारगर सिद्ध होगी। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि बाजार में आज ऑर्गेनिक और प्राकृतिक उत्पादों की मांग बहुत तेजी से बढ़ रही है। यदि उत्तराखंड के किसान इस दिशा में आगे बढ़ते हैं, तो उनके उत्पादों को देश-विदेश के बाजारों में बेहतर मूल्य मिल सकेगा। 2. डिजिटल कृषि और 'फार्मर रजिस्ट्री' का

आह्वान डिजिटल क्रांति के इस दौर में किसानों को आधुनिक व्यवस्था से जोड़ने के लिए बंशीधर भगत ने फार्मर रजिस्ट्री की प्रक्रिया पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि केंद्र एवं राज्य सरकार की अधिकांश योजनाएं अब प्रत्यक्ष लाभ अंतरण पारदर्शिता और त्वरित लाभ: फार्मर रजिस्ट्री होने के किसानों को सरकारी योजनाओं, ख़ाद-बीज सब्सिडी, फसल बीमा तथा वित्तीय सहायताओं का लाभ बिना किसी बिचौलिए के सीधे और पारदर्शी तरीके से मिलेगा। अभिलेखों का अद्यतनीकरण: उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि वे अपने भूमि अभिलेखों को अपडेट रखें और जल्द से जल्द अपनी रजिस्ट्री पूरी कराएं। लोकतांत्रिक अधिकार (मतदाता सूची): इसके साथ ही उन्होंने सभी उपस्थित किसानों से मतदाता सूची



में अपना नाम जांचने और पंजीकृत कराने की अपील की, ताकि प्रत्येक नागरिक अपने संवैधानिक और लोकतांत्रिक अधिकारों का पूर्ण उपयोग कर सके। 3. विभिन्न विभागों के विभागीय स्टॉल और जन-जागरूकता कार्यक्रम स्थल पर कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से जुड़े विभिन्न विभागों द्वारा विशाल प्रदर्शनी (स्टॉल) का आयोजन किया गया। इन स्टॉलों के माध्यम से

किसानों को नवीनतम तकनीकों और योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराई गई: पशुपालन विभाग: डेयरी विकास, नरसल सुधार, पशु बीमा और टीकाकरण अभियानों के बारे में कृषकों को जागरूक किया। मत्स्य पालन विभाग: बायोफ्लॉक तकनीक, तालाब निर्माण और मत्स्य पालकों के लिए उपलब्ध ऋण योजनाओं का विवरण प्रस्तुत किया।



संक्षिप्तसमाचार

19 वीनू मांकड़ ट्रॉफीमें उत्तराखंड ने असम को 255 रन से रौंदा

लड़कियां ने बिहार को 71 रन से दी शिकस्त

देहरादून (एजेंसी)। क्रिकेट के मैदान पर उत्तराखंड के युवा खिलाड़ियों ने दम दिखाया है. अंडर-19 पुरुष टीम ने असम को 255 रन से हराया, तो महिला टीम ने बिहार को 71 रन से शिकस्त दी. दोनों टीमों ने अपनी विपक्षी टीमों को एकतरफा अंदाज में रौंदा दिया।

क्रिकेट के मैदान में उत्तराखंड की युवा प्रतिभाओं का शानदार प्रदर्शन: क्रिकेट के मैदान पर उत्तराखंड की युवा प्रतिभाओं का शानदार प्रदर्शन देखने को मिला है. बीसीसीआई के घरेलू टूर्नामेंट में प्रदेश की अंडर-19 पुरुष और महिला टीमों ने अपने-अपने मुकाबलों में बड़ी जीत दर्ज की. वीनू मांकड़ ट्रॉफी में उत्तराखंड की पुरुष टीम ने असम को 255 रन से हराया, जबकि महिला अंडर-19 टी-20 ट्रॉफी में उत्तराखंड की बेटियों ने बिहार को 71 रन से शिकस्त दी।

पुरुष टीम की जीत में कप्तान आयुष देसवाल की 78 रन की पारी और आकाश कुमार के चार विकेट अहम रहे. वहीं, महिला टीम की ओर से कप्तान करीना ने 47 रन बनाकर टीम को मजबूत स्कोर तक पहुंचाया. दोनों मुकाबलों में उत्तराखंड के बल्लेबाजों और गेंदबाजों ने मिलकर विपक्षी टीमों पर दबाव बनाए रखा।

ऑस्ट्रेलिया ने साउथ अफ्रीका पर 280 रन की बढ़त ली

दूसरी पारी में 4.83 के रनरेट से स्कोर किया, चौथे दिन लंच तक- 174/4



डारबन (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट में मजबूत पकड़ बना ली है। ऑस्ट्रेलिया ने डारबन के किंग्समीड में चौथे दिन लंच 4 विकेट खोकर 174 रन बनाए हैं। टीम की कुल बढ़त 280 रन हो गई है। मैट रेनशॉ 32 और एलेक्स कैरी 5 रन बनाकर त्रिज पर हैं।ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 390 रन बनाए थे। साउथ अफ्रीका की टीम 284 रन पर ऑलआउट हो गई। इस आधार पर ऑस्ट्रेलिया को 106 रन की बढ़त मिली थी।

रेनशॉ दूसरी पारी में भी अच्छी लय में- ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 137.2 ओवर में 390 रन बनाए थे। मैट रेनशॉ ने 397 गेंदों पर 190 रन की शानदार पारी खेली। उन्होंने 21 चौके और एक छक्का लगाया। कप्तान पैट कर्मिस ने 98 गेंदों पर 43 रन बनाए, जबकि लाबुशेन ने 58 गेंदों पर 37 रन जोड़े।मैट रेनशॉ दूसरी पारी में भी वह सकारात्मक अंदाज में बल्लेबाजी कर रहे हैं। लंच तक उन्होंने 47 गेंदों पर 32 रन बनाए हैं, जिसमें 4 चौके शामिल हैं।

साउथ अफ्रीका की पहली पारी 284 रन पर सिमटी- साउथ अफ्रीका ने पहली पारी में 78 ओवर में 284 रन बनाए थे।

भारतीय कप्तान अख्यर ने जीत का श्रेय गेंदबाजों को दिया

कहा- हमारे प्लान विलयर थे, अभिषेक और प्रिंस की पारियां भी अहम रहीं

इंदौर (एजेंसी)। भारत ने पांच मैचों की टी20 सीरीज के तीसरे मैच में मेहमान टीम को 14 रनों से मात दे दी. रविवार को इंदौर के होल्कर स्टेडियम में खेले गए मैच में टीम इंडिया ने पहले 223 रन बनाए और फिर वेस्टइंडीज को 20 ओवर में 209 रनों पर ही रोक दिया. जिसके साथ वो सीरीज में 2-1 से आगे निकल गए। मैच के बाद टीम इंडिया के कप्तान श्रेयस अख्यर ने अपने गेंदबाजों की साफ सोच और पक्के इरादों की तारीफ करते हुए कहा कि मैच में ओस ना पड़ने की वजह से गेंदबाज अपनी योजनाओं पर टिके रहे. जिसकी वजह से मैच में हमें जीत मिली. अर्शदीप ने मैच में कुल 3 विकेट चटकाए, डेथ ओवरों में उनके यॉर्कर सबसे खास थे. इसके अलावा कप्तान ने जीत की नींव रखने वाली बल्लेबाजी की भी तारीफ की, खासकर अभिषेक शर्मा के 69 रन, ईशान किशन के 37 रन और आखिर में प्रिंस यादव की 13 रन की छोटी की। अपनी गेंदबाजी और बल्लेबाजी की तारीफ करने के साथ-साथ अख्यर ने ये भी कहा कि वेस्टइंडीज जैसी टीम को आप कभी हल्के में नहीं ले सकते. इसलिए हम कभी भी लापरवाह नहीं हो सकते थे. ये मैदान हाई-स्कोरिंग था, लेकिन यह जरूरी है कि हम अपनी प्रक्रिया और रूटीन पर टिके रहें और आक्रामक बने रहें।

गेंदबाज और बेहतर कर सकते : कप्तान शाई होप - वहीं दूसरी तरफ मैच हारने वाले वेस्टइंडीज टीम के कप्तान शाई होप ने कहा कि गेंदबाज गेंदबाजों को भी इसका श्रेय जाता है, और बेहतर कर सकते थे. हमने कुछ बाउंड्रीज भी दीं. मेरा मानना ​​?है कि जिस तरह से हमने मैच में वापसी की, वह वाकई तारीफ के काबिल था. शुरुआत से ही, अगर आप अभिषेक और किशन की पार्टनरशिप को देखें, तो वह बहुत खतरनाक थी, लेकिन रोस्टन को बदलत हमें कुछ विकेट मिले और हमने मैच पर दोबारा पकड़ बनाई। उन्होंने यह भी माना कि टीम को बैटिंग ऑर्डर में मजबूत टॉप-3 बल्लेबाजों की जरूरत है, लेकिन ये इसके लिए एक या दो खिलाड़ियों को दोष नहीं देना चाहते थे. इसके अलावा इस मैच में ओस न

पड़ने का भी असर पड़ा. हमें लगा कि हमारी पारी के अखिर में गेंद थोड़ी ज्यादा स्विंग हो रही थी. लेकिन भारतीय गेंदबाजों को भी इसका श्रेय जाता है, उन्होंने बहुत अच्छी गेंदबाजी की और हमें दिखाया कि यॉर्कर कैसे फेंकते हैं। सीरीज का चौथा मैच 14 अक्टूबर को - दोनों टीमों के बीच सीरीज का चौथा मैच 14 अक्टूबर को हैदराबाद में खेला जाएगा. ये मैच दोनों ही टीमों के लिए अहम होगा, क्योंकि अगर इस मैच को भारत जीत जाता है तो वो सीरीज जीत जाएगा और अगर ये मैच मेहमान टीम जीतने में सफल होती है तो वो सीरीज बराबर करने में सफल हो जाएगी. जिसकी वजह से सीरीज का दो खिलाड़ियों को दोष नहीं देना चाहते थे. इसके अलावा इस मैच में ओस न

नमनधीर का शानदार प्रदर्शन, 2 विकेट लिए

मैच की बात करें तो टॉस हारकर भारत ने 20 ओवर में 10 विकेट पर 223 रन बनाए. जिसमें सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा की 30 गेंद में पांच छकों और छह चौकों की मदद से 69 रनों की शानदार पारी शामिल है. इसके अलावा इशान किशन (37 रन, 18 गेंद, छह चौके, एक छक्का) के साथ दूसरे विकेट के लिए 108 रन जोड़कर भारत को बड़े स्कोर की नींव रख दी थी. वेस्टइंडीज की तरफ से रोस्टन चेस, शमर जोसेफ और शमर रिप्पंगर दो-दो विकेट लेने में सफल रहे, जबकि किमो पॉल और गुडाकेश मोठी को एक-एक मिला। भारत के 224 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए वेस्टइंडीज की टीम 7 विकेट पर 209 रन ही बना सकी. जिसमें शिमरोन हेतमायर (43 रन, 26 गेंद, छह चौके, दो छक्के) और कामिल पुरन (42 रन, 27 गेंद, तीन छक्के, तीन चौके) की उम्दा पारियां शामिल थीं. इसके अलावा शमर रिप्पंगर (11 गेंद में नाबाद 35, चार छक्के, दो चौके) ने अंत में तूफानी पारी खेली लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सके. भारत की ओर से अर्शदीप ने 44 रन पर तीन जबकि नमन धीरे ने 39 रन पर दो विकेट चटकाए।

पीवी सिंधु को डेनमार्क ओपन में कठिन ड्रॉ मिला

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारत की स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधु को डेनमार्क ओपन में कठिन ड्रॉ मिला है। मंगलवार से डेनमार्क के ओडेंस में शुरू होने जा रहे इस टूर्नामेंट में सिंधु का पहला मैच दुनिया की नंबर-1 खिलाड़ी और मौजूदा चैंपियन एन से-यंग से होगा। 2 बार की ओलिंपिक मेडलिस्ट सिंधु एन के खिलाफ पिछले 10 मैच हार चुकी हैं। उनके अलावा, मेंस सिंगल्स में लक्ष्य सेन के सामने तीसरी वरीयता प्राप्त चाउ तिएन चैन की चुनौती होगी।सिंधु 2 दिन पहले आर्कटिक ओपन सुपर 500 टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल से हारकर बाहर हो गई थीं।

सिंधु ने जुलाई में जापान ओपन जीता था - पूर्व विश्व चैंपियन सिंधु ने जुलाई में जापान ओपन सुपर 750 का खिताब जीता था। वे यह टूर्नामेंट जीतने वाली पहली भारतीय बनी थीं।सिंधु ने फाइनल मुकाबले में जापान की अकाने यामागुची को 21-17, 21-17 से हराया। यह मुकाबला करीब 50 मिनट तक

चला था।

लक्ष्य को चाउ से पार पाना होगा - एशिया में खराब प्रदर्शन के बाद लक्ष्य सेन अपनी फॉर्म हासिल करना चाहेंगे। पिछले 2 साल में उनका प्रदर्शन अप-डाउन होता रहा है।लक्ष्य इस साल दूसरी बार ऑल इंग्लैंड चैंपियनशिप के उपविजेता रहे। 2022 में भी वे इस टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचे थे। 2024 में ओलिंपिक सेमीफाइनल में पहुंचने वाले लक्ष्य भारत के इकलौते पुरुष सिंगल्स खिलाड़ी हैं। वे पीट की चोट से परेशान रहे हैं।

आयुष और श्रीकांत भी मैदान में - आयुष श्रेष्ठी अपने शानदार प्रदर्शन को आगे बढ़ाना चाहेंगे। उन्होंने 2025 में यूएस ओपन सुपर 300 का खिताब जीता था। इस साल विश्व चैंपियनशिप में आयुष ने तत्कालीन दुनिया के नंबर-1 खिलाड़ी शी यूची को हराकर सुर्खियां बटोरी थीं।उनका सामना इंडोनेशिया के अन्वी फरहान से होगा। विश्व चैंपियनशिप के प्री-क्वार्टर फाइनल में अल्वी ने आयुष को हराया

था। किदांबी श्रीकांत का मुकाबला फ्रांस के अनौड मर्कल से होगा।

महिला सिंगल्स में पांच भारतीय - भारत की महिला सिंगल्स चुनौती में तान्वी शर्मा, अस्मिता चालिहा, देविका सिहाग और उन्नति हूडा भी शामिल हैं। तान्वी का पहले दौर में जापान की नात्सुकी निदाइरा से मुकाबला होगा। उन्होंने अगस्त में ताइपे ओपन जीतकर अपना पहला बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर खिताब जीता था।

अस्मिता का सामना बुल्गारिया की कलेओयाना नलबांतावा से होगा। अस्मिता भी अगस्त में कोरिया मास्टर्स सुपर 300 जीतकर टूर-लेवल चैंपियन बनी थीं। देविका के सामने थाईलैंड की आठवीं वरीयता प्राप्त पोर्नपावी चोचुवण होंगी। उन्नति चीन की हान चियान शी के खिलाफ खेलेंगी।

सात्विक-चिराग से वापसी की उम्मीद - पुरुष डबल्स में पूर्व दुनिया की नंबर-1 जोड़ी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग श्रेष्ठी

वापसी करना चाहेंगे। एशियाई खेलों में यह जोड़ी पहले दौर में चौकाने वाली हार के साथ बाहर हो गई थी।भारतीय जोड़ी ने मई में सिंगपूर ओपन सुपर 750 का खिताब जीता था। इससे उनका दो साल से चला आ रहा खिताबी सूखा खत्म हुआ था।इसके बाद उन्होंने पिछले महीने चाइना मास्टर्स का खिताब भी जीता। पांचवीं वरीयता प्राप्त सात्विक और चिराग का पहले दौर में चीन के हे जी लिंग और रेन शियांग यू से मुकाबला होगा।

ट्रीसा-गायत्री पर भी नजर - महिला डबल्स में ट्रीसा जॉली और गायत्री गोपीचंद भारत की चुनौती की अगुआई करेंगी। इस जोड़ी ने अगस्त में विश्व चैंपियनशिप में ऐतिहासिक कांस्य पदक जीता था। एशियाई खेलों में दोनों क्वार्टर फाइनल तक पहुंची थीं।वहां उन्हें मलेशिया की पियलीं टैन और थिनाह मुरलीधरन ने हराया था। डेनमार्क ओपन में ट्रीसा और गायत्री का पहले दौर में चीनी ताईगु की यान फेंग चैन और ह्सिएह पेंग शान से मुकाबला होगा।

पाकिस्तान टी-20 में अपना दूसरा सबसे बड़ा स्कोर बनाकर जीता

श्रीलंका को 82 रन से हराया, सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त बनाई

करांची (एजेंसी)। पाकिस्तान ने दूसरे टी-20 इंटरनेशनल में श्रीलंका को 82 रन से हरा दिया। इस जीत के साथ पाकिस्तान ने तीन मैचों की सीरीज में 2-0 की अजेय बढ़त हासिल कर ली। श्रीलंकाई टीम घर से बाहर लगातार तीसरी टी-20 सीरीज हारी है। पाकिस्तान ने रविवार को टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 3 विकेट पर 215 रन बनाए। यह टी-20 इंटरनेशनल में पाकिस्तान का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर है। टीम का सर्वोच्च स्कोर 216 है, जो उसने 2021 में इंग्लैंड के खिलाफ बनाया था। जवाब में श्रीलंका की टीम 20 ओवर में 7 विकेट पर 133 रन ही बना सकी। तेज गेंदबाज मोहम्मद इमरान ने 11 रन देकर 3 विकेट लिए। इससे पहले माज सदाकत ने 51 गेंदों पर 96

और कप्तान साहिबजादा फरहान ने 73 रन बनाए। दोनों बल्लेबाजों को कैच छूटने का फायदा मिला। कैच छूटने का पाकिस्तान के बल्लेबाजों ने उठाया फायदा श्रीलंका की खराब फील्डिंग का पाकिस्तान के बल्लेबाजों ने पूरा फायदा उठाया। कप्तान साहिबजादा फरहान जब 11 रन पर थे, तब सिनेथ जयवर्धने ने उनका आसान कैच छेड़ दिया। इससे पहले बिनुरा फर्नांडो के ओवर में महेश तीक्ष्णा ने भी उनका मुश्किल कैच टपकाया था। दो जीवनदान मिलने के बाद फरहान ने 5 छकों और 4 चौकों की मदद से 73 रन बनाए। 15वें ओवर में दासुन शानका की गेंद पर महेश तीक्ष्णा ने सीमा रेखा के पास उनका कैच पकड़ा।

वैश्विक अस्थिरता बढ़ने से भारतीय शेयर बाजार बाल निशान में बंद; सेंसेक्स 72,000 के नीचे

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार सोमवार के कारोबारी सत्र में लाल निशान में बंद हुआ। दिन के अंत में सेंसेक्स 547.65 अंक या 0.76 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 71,924.68 और निफ्टी 157.10 अंक या 0.70 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 22,363.35 पर बंद हुआ।

बाजार में बिकवाली का सबसे अधिक दबाव एफएमसीजी और सरकारी बैंकिंग स्टॉक्स में देखा गया। सूचकांकों में निफ्टी एफएमसीजी 1.67 प्रतिशत और निफ्टी पीएसयू बैंक 1.18 प्रतिशत की कमजोरी के साथ टॉप लूजर्स थे। इसके अलावा, निफ्टी इन्फ्रा, निफ्टी सर्विसेज, निफ्टी आईटी, निफ्टी कंजेशन, निफ्टी कमांडिटीज और निफ्टी ऑयल एंड गैस सबसे ज्यादा गिरने वाले सूचकांकों में शामिल थे।

दूसरी तरफ निफ्टी मीडिया, निफ्टी इंडिया डिफेंस, निफ्टी ओटो, निफ्टी रियल्टी, निफ्टी इंडिया मैयूफैक्चरिंग, निफ्टी फार्मा, निफ्टी पीएसई और निफ्टी एनर्जी हरे निशान में थे।

स्मॉलकैप में खरीदारी देखी गई। निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 272.10 अंक या 1.42 प्रतिशत की बढ़त के साथ 19,425.80 और निफ्टी मिड्कैप 100 इंडेक्स 47.25 अंक की मामूली तेजी के साथ 58,834.55 पर बंद हुआ।

सेंसेक्स पैक में बीईएल, एमएंडएम, कोटक महिंदा बैंक, एचसीएल टेक, बजाज फाइनेंस, सन फार्मा और टाइटन गेनर्स थे। आईटीसी, टेक महिंदा, एचयूएल, एलएडटी, एसबीआई, टीसीएस, भारती एयरटेल, बजाज फिनसर्व, अल्ट्राटेक सीमेंट, इंडीगो, टाटा स्टील, इन्फोसिस, आईसीआईसीआई बैंक, मारुति सुजुकी, एशियन पेट्रोल, एचडीएफसी बैंक, टैट, एक्सिस बैंक, एनटीपीसी, इटरनल और पावर ग्रिड लूजर्स थे।

जानकारों ने कहा कि 10-साल के बॉन्ड यील्ड के तीन साल के उच्चतम स्तर पर पहुंचने और बाहरी अनिश्चितताओं के कारण विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की लगातार बिकवाली से

सेंटीमेंट कमजोर होने के कारण भारतीय बाजार सत्र की शुरुआती बढ़त को बनाए नहीं रख पाए। आरबीआई द्वारा ऑयल मार्केटिंग कंपनियों की डॉलर की जरूरतों के लिए एक स्पेशल विंडो खोलने और हेंजिंग नियमों को सख्त करने के बाद रुपए में रिकवरी आई, जिससे करेंसी पर दबाव कम करने में मदद मिली।

उन्होंने आगे कहा कि आरबीआई द्वारा अतिरिक्त लिक्विडिटी की सोखने के लिए दैनिक सीआरआर मेंटेनेंस की जरूरत को बढ़ाने के बाद बैंकिंग शेयरों में सबसे ज्यादा गिरावट आई, जबकि निवेशक आगे और मॉनेटरी टाइटनिंग की गुंजाइश के संकेतों के लिए घरेलू सीपीआई महंगाई के आंकड़ों का इंतजार कर रहे हैं। हालांकि, मध्य पूर्व में तनाव एक बड़ी चिंता का विषय बना हुआ है, क्योंकि सऊदी और क्षेत्रीय एनर्जी इंफ्रास्ट्रक्चर पर हठी हमलों के जारी रहने से संभावित आपूर्ति में रुकावट और कच्चे तेल की ऊंची कीमतों को लेकर चिंताएं बनी हुई हैं।

फ्रीडा पिंटो ने दी करियर बदलने की सलाह

हरलीन सेटी के एक्टिंग करियर की शुरुआत डांस से हुई। वह डांस करती थीं और सिखाती भी थीं। इसी दौरान उनकी मुलाकात ‘स्लमडॉग मिलेनियर’ फेम अभिनेत्री फ्रीडा पिंटो से हुई। फ्रीडा ने हरलीन से डांस की कुछ पर्सनल वलासेस ली थीं। इसी दौरान उन्होंने हरलीन से एक्टिंग में आने के बारे में पूछा। फ्रीडा उस वक्त फिल्म ‘डेजर्ट डांसर’ की तैयारी कर रही थीं। उन्हें अपने बॉडी मूवमेंट और

परफॉर्मेंस पर काम करना था। इसके लिए उन्होंने हरलीन से ट्रेनिंग ली। बातचीत में हरलीन ने बताया, ‘जब मैं डांस इंस्ट्रक्टर थी और डांस सीखती और सिखाती थी, तब फ्रीडा पिंटो ने मेरे साथ कुछ वलासेस की थीं। वह डांस और परफॉर्मेंस सीखना चाहती थीं। उन्हें अपनी बॉडी में थोड़ी एजिलिटी लानी थी। वह फिल्म ‘डेजर्ट डांसर’ करने जा रही थीं। इसलिए उन्होंने मेरे साथ पर्सनल ट्रेनिंग ली। हमने उनकी बॉडी मूवमेंट और प्लूडिटी पर काम किया।’

फ्रीडा की बात आज भी याद है इसी दौरान फ्रीडा ने हरलीन से एक्टिंग में आने के बारे में पूछा। हरलीन के लिए यह बात खास थी, क्योंकि उस वक्त उन्होंने एक्टिंग को लेकर कोई प्लान नहीं बनाया था। हरलीन ने कहा, ‘फ्रीडा पिंटो उन पहले लोगों में से थीं, जिन्होंने मुझसे कहा कि तुम एक्टिंग क्यों नहीं करती? जब वह मुझसे डांस सीखती थीं, तो मैं उन्हें परफॉर्म करके दिखाती थी कि ऐसे करना है, ये करो। इसी वजह से हमारी अच्छी बॉन्डिंग हो गई थी। वह और उनकी बहन शायना बहुत स्वीट हैं। मैं उनकी बहुत बड़ी फैन हूँ। हम साथ

में काम किया करते थे।’

मैं डायरेक्टर बनना चाहती थी हरलीन उस समय एक्टिंग के बजाय डायरेक्शन में जाना चाहती थीं। उन्होंने बताया, ‘मैं डायरेक्टर बनना चाहती थी। मैंने एडवरटाइजिंग में स्पेशलाइज किया था। मुझे हमेशा से पता था कि मुझे परफॉर्मिंग आर्ट्स में कुछ करना है। लेकिन बचपन से यह तय नहीं था कि आखिर करना क्या है। फिर मुझे लगा कि शायद मैं डायरेक्शन करूंगी। डायरेक्टर एक्टर्स का कैप्टन होता है। तो मैंने सोचा कि मैं वहीं से अपनी जर्नी शुरू करती हूँ।फिर मैंने बहुत सारी एड फिल्में करना शुरू कीं। वहां से मेरी जर्नी एक्टुअली शुरू हुई ..बिहाइंड द कैमरा।’

इन प्रोजेक्ट्स में दिखी हरलीन बता दें कि करीब 13 साल के एक्टिंग सफर में हरलीन ‘ब्रोकन बट यूट्रीफुल’, ‘कोहरा’, ‘सुल्तान ऑफ़ दिल्ली’, ‘बी हैप्पी’ और ‘शक : ट्रस्ट नो वन’ जैसे प्रोजेक्ट्स में नजर आ चुकी हैं।

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●

संक्षिप्त समाचार

इटली के सिसिली में दो बवंडरों का कहर, कई घायल; स्कूल और मकान क्षतिग्रस्त

रोम, एजेंसी। इटली के सिसिली द्वीप के पश्चिमी हिस्से में आए दो शक्तिशाली बवंडरों ने भारी तबाही मचाई है। इस प्राकृतिक आपदा में कई लोग घायल हो गए, कई मकानों और वाहनों को नुकसान पहुंचा तथा एक स्कूल की इमारत बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। शुक्रवार देर शाम आई इस आपदा में 11 लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जबकि 70 वर्षीय व्यक्ति की हालत गंभीर बताई गई है। इटली की न्यूज एजेंसी एएनएसए की रिपोर्ट के अनुसार, बवंडर ने पश्चिमी सिसिली के तटीय शहर मार्साला और आसपास के इलाकों को प्रभावित किया। समुद्र के ऊपर बने बवंडर तट की ओर बढ़े और फिर रियायशी इलाकों में पहुंचकर तबाही मचाने लगे। तेज हवाओं के कारण परत पड़ गई, इमारतों की खिड़कियां टूट गईं, और कई जगहों पर मलबा बिखर गया। मार्साला के एक स्कूल को भी भारी नुकसान पहुंचा। घटना के समय वहां 273 बच्चे मौजूद थे। स्कूल प्रशासन और कर्मचारियों ने तत्काल कार्रवाई करते हुए सभी बच्चों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। हालांकि, घटना में छह बच्चों को मामूली चोट आई।

अमेरिका के पेंसिल्वेनिया में गोलीबारी, संदिग्ध समेत नौ लोगों की मौत

पेंसिल्वेनिया , एजेंसी। अमेरिका के पेंसिल्वेनिया राज्य के एरी शहर में हुई गोलीबारी में संदिग्ध हमलावर समेत नौ लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। हालांकि, अधिकारियों ने घटना से जुड़ी अन्य जानकारियां साझा नहीं की हैं। एरी के पुलिस प्रमुख रिक लोराह ने एक स्थानीय न्यूज चैनल से बातचीत में कहा कि अपने 28 साल से अधिक के करियर में उन्होंने ऐसी घटना नहीं देखी। उन्होंने कहा कि शहर में इतने लोगों की मौत और इतनी बड़ी तबाही का सामना शायद पहले कभी नहीं करना पड़ा। इस घटना के बाद पेंसिल्वेनिया के गवर्नर जोश शापिरो ने शनिवार को एरी की मेयर डारिया डेविलिन को हर संभव मदद देने की पेशकश की। उन्होंने कहा कि उनका प्रशासन इस मुश्किल समय में शहर को पूरा सहयोग देगा। एरी शहर पिट्सबर्ग से करीब 188 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। फिलहाल, घटना को लेकर अधिकारियों ने इससे अधिक जानकारी नहीं दी है।

तूफान की चपेट में आने से अमेरिका में चार लोगों की मौत

फ्लोरिडा, एजेंसी। अमेरिका के कुछ इलाकों में इसायास तूफान का कहर दिख रहा है। फ्लोरिडा पैनहैंडल के किनारे बने होटलों और कॉन्डोमिनियम की छतों को प्रवंड हवाओं के कारण भारी नुकसान उठाना पड़ा है। शनिवार को (स्थानीय समय) तूफान उत्तर की ओर बढ़ गया, जिसके कारण दक्षिणपूर्व में मुसलाधार बारिश हुई। कई जगहों पर अचानक बाढ़ और बवंडर का खतरा मंडरा रहा है। स्थानीय अधिकारियों के मुताबिक तूफान से कम से कम चार लोगों की मौत हुई है जिनमें फ्लोरिडा और अलबामा में घरों पर पेड़ गिरने से मारे गए दो लोग भी शामिल हैं। लगभग 7 लाख उपभोक्ताओं के घरों में बिजली गुल है। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक बाढ़ दक्षिणी अप्पलाचियन पर्वतमाला तक फैल सकती है। गौरतलब है कि इसायास का लैंडफॉल शुक्रवार को फ्लोरिडा के डेस्टिन के पास हुआ, जब श्रेणी 2 का यह तूफान तट से टकराया। डेस्टिन खाड़ी तटीय इलाके में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। ऊंची इमारतों और पर्यटकों को लुभाने वाली दुकानों से भरे इलाके में खतरा बना हुआ है। फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस के मुताबिक रात भर में तूफान कमजोर पड़ा है। अब ये उष्णकटिबंधीय चक्रवात की श्रेणी में है लेकिन अभी भी ‘बाढ़ का खतरा बहुत अधिक है।

रुस की लैब में कर्मचारी की मौत का कारण अब तक स्पष्ट नहीं, डब्ल्यूएचओ ने जांच जारी रखने को कहा

जिनेवा, एजेंसी। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने शनिवार को कहा कि रुस की एक प्रयोगशाला में काम करने वाले युवक की मौत का कारण अभी तक पता नहीं चल पाया है। यह लैब प्लेग और दूसरी बीमारियों पर काम करती है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, शुरुआती रिपोर्टों में मौत की वजह न्यूमोनिक प्लेग होने की आशंका जताई गई थी, लेकिन इसकी पुष्टि नहीं हुई है। यह बीमारी फेफड़ों को गंभीर रूप से प्रभावित करती है और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैल सकती है।

नेपाल की बूढ़ी गंडकी नदी में बाढ़:कई पुल-घर बहे, 4 लापता, लैंडस्लाइड से स्यारी नदी का रास्ता बंद, बिहार में भी खतरा

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल के गोरखा जिले में रविवार सुबह बूढ़ी गंडकी नदी में अचानक बाढ़ आने से कई गांवों को नुकसान पहुंचा है। बाढ़ में कई घर और पुल बह गए। चार लोग लापता हैं। सरकार उनकी तलाश की जा रही है। बाढ़ से 341 मेगावाट के बूढ़ी गंडकी हाइड्रोपवर प्रोजेक्ट का निर्माण कैप और कई मशीनें भी बह गईं। बाढ़ का पानी सुबह करीब 4 बजे बस्तियों में घुसा, जिसके बाद लोगों को घर छोड़कर सुरक्षित जगहों पर जाना पड़ा। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, ऊंचे पहाड़ी इलाके में भूस्खलन के कारण चुन्चुब्री स्यारी नदी का रास्ता बंद हो गया था। इससे पानी जमा हुआ और फिर अचानक

तेज बहाव के साथ नीचे आया। इससे पहले 26 अगस्त को भोटेकोशी और त्रिशूली नदी में मौत हुई थी। साथ ही 5,285 लोग अब भी लापता हैं। सरकार ने बताया कि लगातार हो रहे भूस्खलन के बीच लापता लोगों की तलाश जारी है। आज अहले सुबह नेपाल के गोरखा जिले में फिर से भयानक बाढ़ देखने को मिली। यहां की बूढ़ी गंडक नदी में आई अचानक बाढ़ ने जाना पड़ा। शुरुआती मचाई है। बूढ़ी गंडक नदी के बाढ़ में नेपाल को जान-माल का काफी नुकसान हुआ है। इस बार बाढ़ के साथ मिट्टी, पत्थर एवं भारी भरकम पेड़ बहकर आया



और रास्ते में जो कुछ मिला, वह नदी की धारा में समा गया। नदी अपने साथ घर, पुल, बेस कैम्प सब कुछ बहा कर लेकर चली गई। इस बाढ़ के कारण दोभान, घट्टेखोला, जगत्, सल्लेरी, चुमानुबरी एवं धाचें गांव पालिका में भारी नुकसान हुआ है। वहीं चुमानुबरी से न्याकचेत-सिर्दिबास जाड़ने वाला पुल भी बाढ़ ने बह

राहुल पर चुप्पी साधकर मोदी संग मेट्रो में सफर करते रहे सीएम विजय

- तमिलनाडु में टीवीके की अनूठी राजनीति

चेन्नई, एजेंसी।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय ने अपनी राजनीति को केंद्र सरकार और चुनाव आयोग से जुड़े राजनीतिक विवादों से लगातार दूर रखा है। हाल ही में दिल्ली में राहुल गांधी की हिरासत को लेकर विपक्षी दलों के तीव्र विरोध के बावजूद, उनकी चुप्पी ने ध्यान आकर्षित किया। इस घटना के महज दो दिन बाद, मुख्यमंत्री विजय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ मेट्रो में सफर करते और मंदिर दर्शन करते नजर आए, जो उनकी संतुलित राजनीतिक रणनीति का स्पष्ट संकेत है।दिल्ली में मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे की मांग को लेकर मार्च के दौरान राहुल गांधी को दिल्ली पुलिस ने हिरासत में लिया था। इस पर विपक्षी दलों ने केंद्र सरकार के खिलाफ तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की, लेकिन तमिलनाडु में सत्ताधारी गठबंधन में कांग्रेस की सहयोगी होने के बावजूद, मुख्यमंत्री विजय ने इस मुद्दे पर एक शब्द भी नहीं कहा।

प्रधानमंत्री मोदी रविवार को चेन्नई दौरें पर थे। मुख्यमंत्री विजय ने एयरपोर्ट पर पहुंचकर उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। दिलचस्प



बात यह है कि इससे ठीक एक दिन पहले, राहुल गांधी भी चेन्नई पहुंचे थे और मुख्यमंत्री विजय ने अपने आवास पर उनका स्वागत व दोपहर के भोजन का आयोजन किया था। 24 घंटे के भीतर ही प्रधानमंत्री मोदी का चेन्नई पहुंचना और मुख्यमंत्री विजय द्वारा उनका गर्मजोशी से स्वागत करना, कई राजनीतिक कर्मासों को जन्म दे गया।मेट्रो प्रोजेक्ट के उद्घाटन के बाद, दोनों नेता आईआईटी मद्रास भी गए, जहां उनके साथ सीएम विजय भी

मौजूद थे। इसके बाद वे जलकंडेश्वर मंदिर में भी साथ दिखे। आधिकारिक कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री के साथ विजय का शामिल होना सामान्य है, लेकिन मंदिर में उनकी मौजूदगी ने सियासी गलियारों में विशेष चर्चा छेड़ दी है। इसे प्रोटोकॉल से हटकर देखा जा रहा है, खासकर तब जब विजय विपक्षी दलों के साथ गठबंधन में हैं। ऐसे में प्रधानमंत्री के साथ मंदिर जाने के कई राजनीतिक मायने निकाले जा रहे हैं।

शुक्रवार को राहुल गांधी के चेन्नई पहुंचने पर भी मुख्यमंत्री विजय का कार्यक्रम शुरु में स्पष्ट नहीं था। यह भी पता नहीं था कि राहुल गांधी का उनके साथ दोपहर का भोजन होगा या नहीं। कांग्रेस के हलकों में भी यह माना गया कि यदि मुख्यमंत्री विजय स्वयं आगे नहीं बढ़ते, तो उन पर दबाव डालना उचित नहीं होगा। अंततः, विजय ने राहुल गांधी को अपने घर पर आमंत्रित किया और उनके साथ दोपहर का भोजन किया। इस पूरे घटनाक्रम पर जानकारों का मानना है कि मुख्यमंत्री विजय अनावश्यक राजनीतिक बयानबाजी या विवाद में पड़े अपना काम करना चाहते हैं। उनका उद्देश्य राज्य के विकास के लिए केंद्र सरकार से बेहतर तालमेल बनाए रखना है, साथ ही अपनी सरकार को स्थिर रखने के लिए गठबंधन सहयोगियों के साथ भी सामंजस्य स्थापित करना है। इसी कारण विजय ने न तो राहुल गांधी की अनदेखी की और न ही प्रधानमंत्री मोदी के साथ सार्वजनिक कार्यक्रमों में शामिल होने से इनकार किया, बल्कि दोनों के साथ एक संतुलन बनाए रखा।

बीजेपी पंचायत चुनाव में भी प्रशासन-पुलिस का दुरुपयोग दोहराएगी: अशोक गहलोत



जयपुर, एजेंसी।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत ने सोमवार को पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं से आगामी पंचायती राज चुनावों के लिए एकजुट होने का आह्वान किया। गहलोत ने चेतावनी दी कि बीजेपी चुनावों में “पुलिस और प्रशासन का दुरुपयोग दोहराएगी।” राजस्थान में पंचायती राज चुनाव 22 अक्टूबर से 16 नवंबर तक चार चरणों में होने वाले हैं। गहलोत ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि शहरी निकाय चुनावों की तरह बीजेपी पंचायती राज चुनावों में भी प्रशासन और पुलिस का दुरुपयोग निश्चित रूप से दोहराएगी। हमें लोगों को साथ लेकर इस बेईमानी का मुकाबला करना होगा। उन्होंने दावा किया कि अनियमितताओं के बावजूद कांग्रेस ने शहरी निकाय चुनावों में अच्छा प्रदर्शन किया और उसे बीजेपी के

करीब बराबर वोट मिले। गहलोत ने कहा कि कांग्रेस हमेशा से ग्रामीण इलाकों में मजबूत रही है और इसलिए पार्टी चुनाव जीतीगी। गहलोत ने कहा कि ये चुनाव पार्टी नेतृत्व और कार्यकर्ताओं की सामूहिक जिम्मेदारी हैं। उन्होंने कहा कि यह किसी एक व्यक्ति की लड़ाई नहीं है। यह हम सभी की लड़ाई है। उन्होंने कहा कि मैं जनप्रतिनिधियों से फोन पर बात भी कर रहा हूं और कई साथियों से पहले ही बात कर चुका हूं। उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से गांवों का दौरा करने, लोगों के बीच रहने और बीजेपी की उन गतिविधियों को उजागर करने का आग्रह किया, जिन्हें उन्होंने अलोकतांत्रिक बताया। गहलोत ने कहा कि जब लोग हमारे साथ होते हैं, तो कोई भी प्रशासन या पुलिस उनसे उनका जनादेश नहीं छीन सकती।

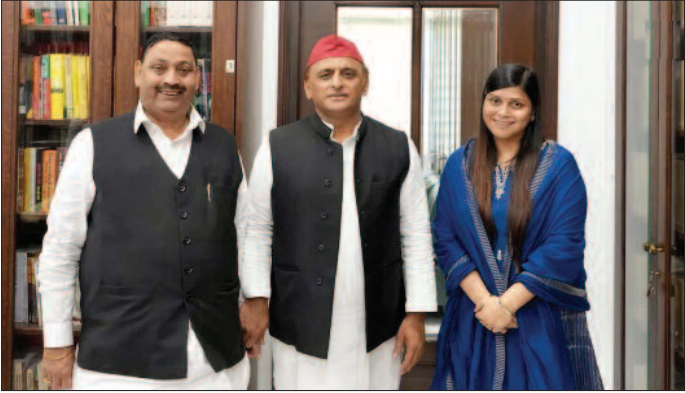
भाजपा के कश्यप ने की अखिलेश से मुलाकात, यूपी में गरमा गई सियासत

- बरेली में मुख्यमंत्री के दौरें से पहले राजनीतिक भूचाल

बरेली, एजेंसी।

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव से पहले राजनीतिक गहमागहमी तेज हो गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बरेली के दौरें पर आ रहे हैं, लेकिन इससे ठीक पहले जिले का राजनीतिक समीकरण बदल गया है। आंवला से लगातार दो बार सांसद रहे और पिछले चुनाव में भाजपा प्रत्याशी रहे धर्मेन्द्र कश्यप ने भाजपा से इस्तीफा देकर रविवार को समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव से मुलाकात कर बड़ा सियासी दांव चला है।

धर्मेन्द्र कश्यप ने अपनी बेटी कीर्ति के साथ अखिलेश से मुलाकात की और उसके लिए बिथरी चैनपुर सीट पर दावा भी ठेक दिया। उनके इस कदम से समाजवादी पार्टी में भी हलचल मच गई है, क्योंकि सपा के वरिष्ठ नेता वीरपाल सिंह यादव अपने बेटे डॉ. देवेंद्र यादव के लिए इसी सीट से विधान परिषद सीट से भाजपा प्रत्याशी हरि खींचतान को देखते हुए अखिलेश यादव ने वीरपाल को लखनऊ बुलाकर समीकरणों पर चर्चा की है।



मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंगलवार को बरेली में करीब साढ़े तीन घंटे रहे।। इस दौरान वे बरेली और मुरादाबाद मंडल के नौ जिलों के करीब पांच हजार ग्राम प्रहरियों से संवाद कर उन्हें सम्मानित करेंगे। इसके बाद मुख्यमंत्री बरेली क्लब मैदान में बरेली-मुरादाबाद खंड शिक्षक समाज प्रमुख अखिलेश यादव से उनकी मुलाकात के बाद पार्टी में उनके शामिल होने की चर्चा तेज हो गई है। इसकी लेकर प्रशासन ने तैयारियां पूरी कर ली हैं,

जिसमें सुरक्षा व्यवस्था, सड़कों की मरम्मत और सभा स्थल पर वाटरपूफ पंडाल की व्यवस्था शामिल है। धर्मेन्द्र कश्यप के पिछले कुछ दिनों में उठाए गए कदमों से जिले में राजनीतिक गहमागहमी बढ़ गई है। भाजपा से इस्तीफा देने के बाद उन्होंने समाजवादी पार्टी का रुख किया है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव से उनकी मुलाकात के बाद पार्टी में उनके शामिल होने की चर्चा तेज हो गई है। इसकी लेकर प्रशासन ने तैयारियां पूरी कर ली हैं,

लखनऊ में एक कार्यक्रम में की जाएगी, जहां वे अपने समर्थकों के साथ सपा में शामिल होंगे। धर्मेन्द्र कश्यप अपनी बेटी कीर्ति कश्यप को बिथरी चैनपुर सीट से चुनाव लड़ाने की इच्छा पहले ही जता चुके हैं, और उनकी अखिलेश यादव से मुलाकात को इसी संदर्भ में देखा जा रहा है। बरेली की सियासत में हलचल उस वक्त और तेज हो गई, जब सपा के वरिष्ठ नेता वीरपाल सिंह यादव को आंवला विधानसभा क्षेत्र का प्रभारी बनाया गया। माना जा रहा है कि वीरपाल अपने बेटे डॉ. देवेंद्र यादव के लिए बिथरी चैनपुर सीट से टिकट की पैरवी कर रहे थे, लेकिन इसी सीट पर धर्मेन्द्र कश्यप अपनी बेटी के लिए दावेदारी पेश कर रहे हैं। इस समस्या का समाधान करने के लिए ही सपा प्रमुख ने वीरपाल सिंह यादव और पूर्व मंत्री भगवत शरण गंगवार को लखनऊ बुलाकर समीकरणों पर चर्चा की। चर्चा के बाद वीरपाल को आंवला की जिम्मेदारी सौंप दी गई, जिसे उनकी राजनीतिक भूमिका के लिहाज से अहम माना जा रहा है।

कनाडा की संप्रभुता को चुनौती दे रहा खालिस्तानी अलगाववाद, रिपोर्ट में चेतावनी

ओटावा , एजेंसी। कनाडा में अलगाववाद के बढ़ते प्रभाव को लेकर एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई है। चेतावनी भरे अंदाज में कहा गया है कि देश दूसरे देशों की संप्रभुता को नकारने वाले आंदोलनों को जगह देकर अपनी संप्रभुता की रक्षा नहीं कर सकता। रिपोर्ट के अनुसार, कनाडा सिखों की धार्मिक स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति और आजादी और राजनीतिक भागीदारी की रक्षा करते हुए भी अलगाववादी एजेंडे को वैधता देने से बच सकता है। खालसा वॉक्स की रिपोर्ट में कहा गया है कि इसके लिए आतंकवादी संगठनों के खिलाफ घोषित प्रतिबंधों को लागू करना, एयर इंडिया विमान बम विस्फोट के दोषियों का महिमांडन करने वाले समूहों को मंच देने से इनकार करना और किसी विदेशी जनमत संग्रह को कनाडा के परिपंख से जुड़े मतदान के साथ एक जैसी राजनीतिक अहमियत नहीं देना जरूरी है।

कुछ विज्ञापनों का भी उल्लेख करते हुए आगे कहा गया, ‘कनाडा के अलबर्टा प्रांत में 19 अक्टूबर को इस सवाल पर मतदान की तैयारी है कि क्या प्रांत की स्वतंत्रता के लिए बाध्यकारी जनमत संग्रह कराने की संवैधानिक प्रक्रिया शुरू की जानी चाहिए।’ इसी बीच, एयरइंडी के आसपास लगे विज्ञापन 18 अक्टूबर को एडमंटन में प्रस्तावित ‘पंजाब की स्वतंत्रता पर अलबर्टा जनमत संग्रह’ की ओर ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।

रिपोर्ट में इन विज्ञापनों के पीछे अमेरिका स्थित खालिस्तानी संगठन ‘सिख फॉर जस्टिस’ (एसएफजे) का हाथ बताया गया है। इसमें कहा गया है कि इस संगठन ने



सार्वजनिक रूप से अलबर्टा के कैलगरी शहर में खालिस्तान समर्थक रैली को ‘पंजाब जनमत संग्रह और अलबर्टा की स्वतंत्रता’, दोनों अभियानों के लिए मंच के रूप में पेश किया है। संगठन ने अलबर्टा के लोगों को आत्मनिर्णय के अधिकार का इस्तेमाल करने देने के लिए कनाडा सरकार की भी सराहना की है। अलबर्टा की स्वतंत्रता का समर्थन करने वाले एक वक्ता ने खालिस्तान समर्थक रैली में कहा कि इस आयोजन से उन्हें अपने अभियान के लिए प्रेरणा मिलती है। रिपोर्ट में दोनों आयोजनों की तारीखों के बीच एक दिन का अंतर होने को जानबूझकर अपनाई गई रणनीति बताया गया है। खालसा वॉक्स की रिपोर्ट में कहा गया, ‘एसएफजे के जनमत संग्रह अनौपचारिक और गैर-बाध्यकारी हैं तथा भारत सरकार के लिए उनका कोई कानूनी महत्व नहीं है। कनाडा के लिए इनके राजनीतिक और सामाजिक प्रभावों को नजरअंदाज करना उचित नहीं होगा। यह आंदोलन पिछले चार दशकों से कनाडा की एकता से जुड़े महत्वपूर्ण मतदान के साथ इस मुद्दे को जोड़ने की कोशिश की जा रही है।